

नये नियम का इतिहास, साहित्य और धर्मशास्त्र

सत्र 6: मत्ती का परिचय भाग 1

डॉ. टेड हिल्डेब्रांट

ए. परिचय [00:00- 1:10]

ए: कम्बाइन एसी; 00:00-9:15; मैथ्यू एक्रोस्टिक का परिचय

यह डॉ. टेड हिल्डेब्रांट द्वारा न्यू टेस्टामेंट इतिहास, साहित्य और धर्मशास्त्र पाठ्यक्रम के व्याख्यान संख्या 6 में मत्ती की पुस्तक की आरंभिक विशेषताओं पर दिया गया व्याख्यान है।

नए नियम के इतिहास और धर्मशास्त्र पाठ्यक्रम में आपका स्वागत है; हमने पृष्ठभूमि, फारसियों, यूनानियों, मैकाबीन , रोमनों तक का अध्ययन किया है। फिर पिछली बार प्रेरणा के प्रश्न पर आते हैं; प्रामाणिकता, संग्रह प्रक्रिया; शास्त्रियों द्वारा बार-बार प्रतिलिपि बनाने की प्रतिलेखन प्रक्रिया और हम इसका मूल्यांकन कैसे करते हैं। पिछली बार हमने अनुवादों और विभिन्न अनुवादों और यह कैसे किया जाता है, के बारे में बात की थी। तो हमने प्रेरणा, प्रामाणिकता, संचरण और अनुवाद के बारे में बात की है। अब, आखिरकार, हम मैथ्यू की पुस्तक के लिए तैयार हैं। तो आज एक तरह से शुरुआत है, हम मैथ्यू की पुस्तक में जाने वाले हैं और कुछ बड़ी तस्वीर को देखेंगे। हम स्पष्ट रूप से इसके बारे में विस्तार से नहीं जाने वाले हैं, लेकिन आपको पुस्तक के बारे में अच्छी समझ हो जाएगी।

बी. सुसमाचार: लेखक और श्रोता [1:10- 5:26]

इसलिए मैं मैथ्यू के सुसमाचार से और मूल रूप से मैथ्यू की कहानी से शुरुआत करना चाहता हूँ। मैं इस तरह के एक्रोस्टिक के अनुसार मैथ्यू के विषयों पर अपनी पूरी चर्चा को व्यवस्थित करना चाहता हूँ। इसलिए मूल रूप से मैं जो कहना चाहता हूँ वह यह है कि मैथ्यू व्यवस्थित है। हम मैथ्यू को व्यवस्थित कैसे पाते हैं, यह इस प्रकार है कि हमारे पास दो अन्य सुसमाचार हैं, मार्क और ल्यूक, और हम मैथ्यू की तुलना मार्क और ल्यूक से करेंगे और देखेंगे कि उनके बीच क्या अंतर हैं। मैं जो सुझाव देना चाहता हूँ वह यह है कि मैथ्यू व्यवस्थित है। वैसे, इन कुछ सुसमाचारों से शुरू करते हुए, हमारे पास वास्तव में चार सुसमाचार हैं। हमारे पास मैथ्यू, मार्क और ल्यूक हैं, उन तीनों

को सिनॉटिक सुसमाचार कहा जाता है। हम बाद में इस पर चर्चा करेंगे, सिनॉटिक्स, इसका अर्थ है "एक आँख से", दूसरे शब्दों में, मैथ्यू, मार्क और ल्यूक सभी यीशु को एक ही दृष्टिकोण से देखते हैं। इसलिए उन्हें सिनॉटिक सुसमाचार कहा जाता है, वे यीशु को एक आँख से देखते हैं। दूसरा सुसमाचार, जॉन, नब्बे प्रतिशत समय में मसीह को बहुत अलग तरीके से देखता है। जॉन का सुसमाचार मैथ्यू, मार्क और ल्यूक की कहानियों से बिल्कुल अलग है। तो आपको एक बिल्कुल अलग दृष्टिकोण मिलता है और कुछ लोग (हम आपको मत्ती, मरकुस और लूका और यूहन्ना के बीच कुछ अंतर दिखाएंगे) इन अंतरों से परेशान हैं। मैं अंतरों को देखता हूँ, और मैं अंतरों के लिए परमेश्वर को धन्यवाद देता हूँ। क्या लोग अलग-अलग तरीके से कहानियाँ सुनाते हैं? तो मत्ती एक कर संग्रहकर्ता के रूप में, वह मरकुस से अलग तरीके से कहानी सुनाएगा, जो जाहिर तौर पर उस समय एक युवा व्यक्ति था जो यरूशलेम से था। लूका कभी यीशु से नहीं मिला। लूका एक इतिहासकार, एक डॉक्टर होने जा रहा है, और इसलिए उसका दृष्टिकोण यूहन्ना से बहुत अलग होने जा रहा है जो एक मछुआरा था जिसे यीशु ने गलील की झील के पास बुलाया था। तो आपके पास अपने अलग-अलग दृष्टिकोणों वाले ये चार अलग-अलग लोग हैं; इसलिए लेखक के दृष्टिकोण से उनमें से प्रत्येक के पास यीशु के जीवन से जो कुछ भी सीखा है, उसके बारे में एक अलग दृष्टिकोण है।

वे किस तरह के दर्शकों को संबोधित कर रहे हैं? आप जिस दर्शक को संबोधित कर रहे हैं उसके अनुसार कहानी को अलग-अलग तरीके से सुनाते हैं। मेरे लिए कहानी सुनाने वाले व्यक्ति में से एक क्लासिक है मेरा बेटा जो अभी-अभी अफ़ग़ानिस्तान से वापस आया है और वह परिवार के साथ कहानियाँ सुना रहा था। हमारे बच्चे वहाँ थे और वह कहानियाँ सुना रहा था। वह एक बेहतरीन कहानीकार है--और इसलिए वे हँस रहे हैं और मज़े कर रहे हैं और कहानियाँ आपको हँसाती हैं। वे वाकई मज़ेदार कहानियाँ हैं और इसलिए हम सब कहानियों पर हँस रहे हैं। फिर बच्चे मेरे दूसरे बेटे, जैक को एयरपोर्ट पर लेने गए और जैसे ही बच्चे कमरे से बाहर निकले, मेरे बेटे ने मेरी पत्नी और मुझे अलग-अलग कहानियाँ सुनानी शुरू कर दीं। हँसने के बजाय वे ऐसी कहानियाँ थीं जो हमें लगभग रुला देती थीं। तो मैं जो कह रहा हूँ वह यह है कि आप एक जैसी कहानियाँ सुना सकते हैं,

और उसकी कुछ कहानियाँ मैंने अब तक कई बार सुनी हैं और जब मैंने उन्हें तीन बार सुना तो मैंने सुना कि वह अलग-अलग दर्शकों को सुना रहा है, वह अलग-अलग चीज़ों पर ज़ोर दे रहा है। फिर जब आप उसके साथ कार में अकेले होते हैं, तो अचानक वह आपको उन सभी कहानियों के पीछे का कारण बताता है और वह उन सभी को जोड़ता है। इसलिए लोग अलग-अलग तरीके से कहानियाँ सुनाते हैं। और इसलिए इसे एकरूप बनाने की कोशिश करने के बजाय, जहाँ सभी कहानियाँ बिल्कुल एक जैसी हों, चर्च ऐसा नहीं चाहता था। चर्च चाहता था कि यीशु की अलग-अलग कहानियाँ सुनाई जाएँ। यह कुछ इस तरह है कि आपके पास दो आँखें क्यों हैं? अगर आप एक आँख से अंधे हैं तो आपके पास कोई गहराई का बोध नहीं है, और इसलिए आपके पास दो आँखें हैं। अब उनके पास दो लेंस वाले कैमरे हैं, ताकि आप वास्तव में फ़ील्ड की गहराई, इस 3-डी सेंस को प्राप्त कर सकें। यीशु के साथ आपको चार सुसमाचार दिए गए हैं जिनमें यीशु के बारे में चार अलग-अलग दृष्टिकोण हैं। जॉन कहते हैं कि अगर हम यीशु द्वारा कही गई और की गई हर बात को लिख दें तो दुनिया की सभी किताबें उसे समाहित नहीं कर पाएँगी। इसलिए हमें यीशु के बारे में चार अलग-अलग स्नेप शॉट और दृष्टिकोण मिल रहे हैं और यह मददगार है। जब हम सुसमाचारों के बीच संघर्ष के स्थानों पर आते हैं, तो अपने हाथ ऊपर न उठाएँ और न ही कहें कि संघर्ष आपको परेशान करता है। नहीं, यह अद्भुत है - हम यीशु के बारे में अलग-अलग दृष्टिकोण देखना चाहते हैं।

सी. अवलोकन – मैथ्यूज एक्रोस्टिक [5:26-9:15]

मैथ्यू की विधिवत [एम] जब हम उनकी तुलना मार्क और ल्यूक से करते हैं और हम बाद में एक सेकंड में उस पर जाएंगे। यहाँ दूसरी बात है जिस पर हम गौर करना चाहते हैं कि मैथ्यू का सुसमाचार प्रेरित [ए] है। मैंने ऐसा इसलिए किया ताकि मैं उसमें से "ए" प्राप्त कर सकूँ, लेकिन मैथ्यू शिष्यत्व के बारे में बात करता है। पुस्तक में शिष्यत्व एक प्रमुख विषय है; मैथ्यू की पुस्तक में यीशु को एक शिक्षक के रूप में चित्रित किया गया है। उन्हें एक दूसरे मूसा, एक नए मूसा के रूप में देखा जाता है, और आपको यह नया मूसा रूपांकन मिलता है। यीशु अपने शिष्यों को अपनी शिक्षा

देने वाले नए मूसा हैं। तो यीशु मसीह का शिष्य होने का क्या मतलब है? मैथ्यू उन्हें शिक्षक के रूप में विकसित करेगा जिसे यीशु अपने शिष्यों को बुलाते हैं।

तो हमारे पास शिष्यत्व या प्रेरितत्व है, और फिर हम मसीह के धर्मशास्त्र [टी] के बारे में बात करेंगे। मसीह का धर्मशास्त्र क्या है? जैसा कि हम चित्र शास्त्र को देखते हैं, यीशु मसीह को राजा के रूप में चित्रित किया गया है। मैथ्यू अध्याय 1 पद 1 में यह कहा गया है “यीशु मसीह दाऊद का पुत्र”। मैथ्यू “यीशु मसीह दाऊद का पुत्र” से क्यों शुरू करता है? “अब्राहम का पुत्र, दाऊद का पुत्र” – वह इसे दाऊद से शुरू करता है क्योंकि वह यीशु को राजा के रूप में चित्रित करने जा रहा है। मैथ्यू की पुस्तक यीशु को दाऊद के पुत्र, मसीह के रूप में चित्रित करती है।

हम मैथ्यू की पुस्तक में समय [T] पर भी नज़र डालेंगे। वह अतीत के प्रति बहुत सम्मान रखेगा। मैथ्यू किसी भी अन्य सुसमाचार से ज़्यादा, पुराने नियम से उद्धरण देगा; वह संभवतः यहूदी श्रोताओं को लिख रहा है, इसलिए वह पुराने नियम से बहुत सी बातें उद्धृत करेगा और अतीत का संदर्भ देगा। वह हमें वर्तमान में यीशु के बारे में बहुत कुछ बताएगा, और हमें यीशु के महान 5 उपदेश देगा, मैथ्यू में पाए गए यीशु के महान पाँच प्रवचन। यह मूसा के नए पेंटाटेच की तरह है, यीशु नया पेंटाटेच देंगे। आप पर्वत पर उपदेश और जैतून के प्रवचन को जानते हैं। मैथ्यू की पुस्तक में जैतून के प्रवचन में भी यीशु भविष्य पर कुछ अध्यायों पर ध्यान केंद्रित करेंगे। भविष्य वर्तमान से कैसे जुड़ता है, आने वाला राज्य उस राज्य से कैसे तुलना करता है जो अभी हमारे भीतर है? मैथ्यू में यह तनाव होगा जिसे हम कहेंगे...डॉ. डेव मैथ्यूसन जो यहाँ गॉर्डन कॉलेज में पढ़ाते थे, हमेशा यह कहना पसंद करते थे, "पहले से ही लेकिन अभी तक नहीं।" मेरा मानना है कि जॉर्ज एल्डन लैड ने कहा था, "पहले से ही, लेकिन अभी तक नहीं।" इसलिए, सुसमाचार में पहले से ही, जो चर्च में पहले से ही मौजूद है, और जो अभी आना बाकी है, के बीच यह तनाव होगा। तो आपको पहले से ही और अभी तक नहीं के बीच यह तनाव मिलता है। हम इस पर गौर करेंगे और मत्ती इस समय परिप्रेक्ष्य को कैसे कवर करता है।

फिर "एच" हम इस पुस्तक में हिब्रू परिप्रेक्ष्य दिखाएंगे। मैथ्यू की पुस्तक बहुत हिब्रू उन्मुख है, बहुत यहूदी उन्मुख है, और इसमें बहुत यहूदी पाठक हैं। कुछ लोगों ने यह भी सोचा कि मैथ्यू की

पुस्तक अरामी में लिखी गई थी और ग्रीक में अनुवादित की गई थी। इस पर पक्ष और विपक्ष में बहस की जाती है लेकिन ऐसा लगता है कि यह यहूदी पाठकों, हिब्रू पाठकों के लिए लिखी गई है। जबकि यह यहूदी पाठकों के लिए लिखी गई है, पुस्तक अन्यजातियों (जो लोग गैर-यहूदी हैं) को शामिल करने के मामले में भी विस्तृत है। इसलिए यह व्यापक है कि इसमें पुस्तक में एक गैर-यहूदी पहलू है जिसे हमेशा आगे बढ़ाया जाता है - और हम उस गैर-यहूदी पहलू पर कुछ चर्चा करेंगे। फिर गवाह [डब्ल्यू], सुसमाचार की शुरुआत और सुसमाचार का अंत हमें बताता है कि हमें मसीह के लिए गवाह बनना है, और इसलिए हम गवाह की धारणा को देखेंगे। अंत में, बस संक्षेप में हम मैथ्यू की शैली [एस] को देखेंगे, अन्य सुसमाचार लेखकों की तुलना में उनकी लेखन शैली क्या है। यह है, मुझे नहीं पता कि आप इसे देख सकते हैं या नहीं, मैथ्यू, और इसलिए हमारे पास यहाँ मैथ्यू का अंत में एक "एस" है, इसलिए यह हमारे लिए हमारी चर्चाओं को व्यवस्थित करेगा क्योंकि हम आगे बढ़ते हैं। मूर्खतापूर्ण एक्रोस्टिक के लिए क्षमा करें, लेकिन मैं चीजों को इसी तरह याद रखता हूँ।

डी. विधिवत [एम] – मैथ्यू और मार्क [9:15-12:49]

बी: डी.एफ. को संयोजित करें; 9:15-18:26; मत्ती विधिवत् है (cf. एम.के./एल.के.)

इसलिए हम मैथ्यू को व्यवस्थित रूप से देखना शुरू करना चाहते हैं। तो मैथ्यू की कहानी, वह कैसे कहानी सुनाता है? मैथ्यू मार्क से कैसे अलग है? बहुत से लोग मार्कन को प्राथमिकता में स्वीकार करेंगे, यानी, कि मार्क ने पहले लिखा और फिर मैथ्यू ने दूसरे नंबर पर लिखा। मैथ्यू मार्क की किताब से बहुत सी चीजें खींचता है, जैसा कि ल्यूक करता है। इसलिए ल्यूक मार्क पर निर्भर है, और मैथ्यू मार्क पर निर्भर है। वे कैसे अलग हैं? मैथ्यू ने अपने उद्देश्यों और अपने दर्शकों के अनुसार चीजों को कैसे संशोधित किया? मैथ्यू ल्यूक से कैसे अलग है? आप मैथ्यू और ल्यूक को जानते हैं, फिर से दोनों शायद मार्क से खींच रहे हैं और मार्क के बारे में जानते थे। ल्यूक हमें शुरू में बताता है कि वह कभी यीशु से नहीं मिला, लेकिन वह चश्मदीद गवाहों के साथ ऐतिहासिक काम कर रहा है। ल्यूक ने विशेष रूप से उल्लेख किया है कि वह चश्मदीद गवाहों को खींच रहा है, और वह

थियोफिलस के लिए कहानी को व्यवस्थित कर रहा है - वह सबसे अच्छे थियोफिलस को लिख रहा है, दूसरी ओर, मैथ्यू यहूदियों को लिख रहा है।

मुद्दा अद्वितीय सामग्री है - मैथ्यू के बारे में क्या अद्वितीय है, वह हमें अपना दृष्टिकोण बताएगा और वह वास्तव में क्या संवाद करने की कोशिश कर रहा है। आप ल्यूक और मैथ्यू और मार्क के साथ मतभेदों को देखना चाहते हैं ताकि उसका अद्वितीय दृष्टिकोण दिखाया जा सके, और हमें यीशु के बारे में उसके अद्वितीय दृष्टिकोण और वह क्या करने की कोशिश कर रहा है, यह पता लगाने में मदद मिल सके। तो सबसे पहले, हम मैथ्यू के मार्क के साथ संबंधों को विकसित करना चाहते हैं और उनमें से एक बात यह है कि मैथ्यू यहाँ, यह कहता है "मार्क के संक्षिप्त कथनों को विकसित करता है।" मार्क के पास संक्षिप्त कथन हैं, मार्क एक छोटी पुस्तक है - मार्क 16 अध्याय हैं और अध्याय छोटे हैं - मैथ्यू एक लंबी पुस्तक है, 28 अध्याय हैं। तो आपको मार्क से इस तरह के कथन मिलते हैं, अब इसे देखें, आपने मैथ्यू की पुस्तक में मसीह के प्रलोभन को पढ़ा है। यहाँ मसीह का प्रलोभन है, आइए सबसे पहले, मैथ्यू की पुस्तक में मसीह के प्रलोभन की समीक्षा करें। पिक्चर स्क्रिप्चर से क्या आपको याद है कि वह किस अध्याय में है? मसीह का प्रलोभन मत्ती अध्याय 4 में है, यीशु को आत्मा द्वारा जंगल में ले जाया जाता है और जंगल में शैतान उसके पास आता है, और वह कहता है क्या? इन पत्थरों को रोटी में बदल दो। यीशु व्यवस्थाविवरण में पुराने नियम के कानून का उपयोग करते हुए जवाब देते हैं, "मनुष्य केवल रोटी पर जीवित नहीं रहता है।" फिर शैतान उसे मंदिर के शिखर पर ले जाता है (आप में से कुछ लोग जो यरूशलेम में खोजें कार्यक्रम का उपयोग कर रहे हैं, आप जाकर देख सकते हैं कि मंदिर का शिखर कहाँ था - अब और हाल ही में, वास्तव में वहाँ 15^{वीं} शताब्दी की दीवार है, मूल रूप से उसी स्थान पर)। यीशु कहते हैं, "ठीक है," और इसलिए वह यीशु को मंदिर के शिखर पर ले जाता है और कहता है कि अपने आप को नीचे फेंक दो। अब शैतान पुराने नियम को उद्धृत करता है और कहता है, "स्वर्गदूत [भजन की पुस्तक से] तुम्हें उठा लेंगे ताकि तुम अपना पैर पत्थर से न टकराओ।" और यीशु ने शैतान से कहा, फिर से व्यवस्थाविवरण से उद्धृत करते हुए, "अपने परमेश्वर यहोवा की परीक्षा मत करो।" तीसरी बार, शैतान उसे ऊँचे पहाड़ों पर ले जाता है, कुछ लोग सोचते हैं कि यह माउंट हरमोन है, जो उत्तर की

ओर है। वह उसे दुनिया के सभी राज्य दिखाता है, और कहता है, "मैं तुम्हें ये सभी राज्य दे दूंगा यदि तुम झुककर मेरी पूजा करो।" यीशु कहते हैं, "यहाँ से निकल जाओ शैतान, तुम्हें केवल अपने परमेश्वर यहोवा की पूजा करनी चाहिए।" फिर से, [वह] व्यवस्थाविवरण की पुस्तक का हवाला देते हुए शैतान को जवाब देता है। इसलिए यीशु ने शैतान के साथ तीन बातचीत की; पत्थरों से रोटी, खुद को शिखर मंदिर से नीचे फेंक दो, और फिर पहाड़ की चोटी पर सभी राज्य जो मैं तुम्हें दूंगा।

ई. मार्क में प्रलोभन [12:49-15:02]

यहाँ मार्क की पुस्तक में मसीह का प्रलोभन है: "तुरंत [यह अध्याय एक, श्लोक 12 और उसके बाद है] आत्मा ने उसे जंगल में भेज दिया, वह जंगल में 40 दिनों तक शैतान द्वारा परीक्षा में रहा। वह जंगली जानवरों के साथ था और स्वर्गदूत उसके साथ थे।" मार्क में मसीह के प्रलोभन का यही अंत है। आप कहते हैं, "पत्थरों से लेकर रोटी तक, शिखर मंदिर के बारे में क्या, इसमें किसी भी प्रलोभन का उल्लेख नहीं है, यह सिर्फ इतना कहता है कि, "...वह वहाँ शैतान द्वारा परीक्षा में था। वह जंगली जानवरों के साथ था।" अब आप कहते हैं, "ठीक है, मैथ्यू ने हमें जंगली जानवरों के बारे में नहीं बताया।" ऐसा लगता है कि मार्क जंगली जानवरों और स्वर्गदूतों के बारे में बात कर रहा है। फिर से चीजें वहाँ नहीं हैं, और आप कहते हैं कि मार्क ने क्यों कहा, "जंगली जानवर और स्वर्गदूत उसके साथ थे।" उसने इसे क्यों डाला? मार्क शायद रोमन श्रोताओं को लिख रहा है, देखें कि क्या आप इसे समझ सकते हैं, इसलिए "जंगली जानवर और उसके साथ रहने वाले स्वर्गदूत" फिट बैठते हैं। मैथ्यू इसका उल्लेख नहीं करता है, वह शैतान के साथ यीशु की बातचीत का उल्लेख करता है "हसतन [शैतान / आरोप लगाने वाला]" जैसा कि पुराने नियम में उसे कहा जाता है, और फिर मूल रूप से उसे तीन स्थानों पर ले जाता है जो यहूदी धर्म में अच्छी तरह से ज्ञात हैं। "जंगल से बाहर" क्या आप मूसा के दूसरे मूल भाव को देखते हैं - जंगल से बाहर शैतान द्वारा लुभाया जा रहा है। इसलिए मैथ्यू का एक अलग दृष्टिकोण है, वह कहानी से तीन पहलुओं को विकसित करता है। इसलिए मैथ्यू संक्षेप में बताता है, मार्क के संक्षिप्त कथनों को लेता है, और उन्हें खोलता है - यही मैथ्यू की पुस्तक है। यहाँ एक दूसरी बात, इसलिए प्रलोभन, हमने अभी मार्क अध्याय 1 श्लोक 12-13 के बारे में बात की है, मैथ्यू अध्याय 4 श्लोक 1-11 में विस्तारित किया गया है। मैथ्यू इसे इस

तरह क्यों विकसित करेगा, यीशु को एक नया इज़राइल दिखाया जा रहा है। और जैसा कि इज़राइल जंगल में प्रलोभन में था और फिर असफल हो गया, अब यीशु, नया इस्राएल, जंगल में है, केवल वही सफल होता है। वह शैतान के प्रलोभन का विरोध करता है। इसलिए मैथ्यू की पुस्तक में इस मार्ग में यीशु को नए इस्राएल के रूप में विकसित किया गया है।

एफ. पहाड़ी उपदेश – राज्य का प्रचार [15:02-18:26]

अब राज्य का प्रचार करते हुए, मार्क की पुस्तक में, अध्याय 1:14 में, यह उल्लेख किया गया है कि यीशु परमेश्वर के राज्य का प्रचार कर रहे थे। इसमें उल्लेख है [मुझे अध्याय 1:14 में यह खंड पढ़ने दें], "यूहन्ना को जेल में डाल दिए जाने के बाद यीशु परमेश्वर की खुशखबरी सुनाते हुए गलील में गए, समय आ गया है," उन्होंने कहा, "परमेश्वर का राज्य निकट है, पश्चाताप करो और खुशखबरी पर विश्वास करो।" मार्क के लिए खुशखबरी एक बड़ी बात है - "पश्चाताप करो और खुशखबरी पर विश्वास करो," बस इतना ही। परमेश्वर के राज्य के बारे में यीशु की शिक्षा यहीं समाप्त होती है। अब जब आप मैथ्यू की पुस्तक में जाते हैं तो क्या होता है? मैथ्यू में, यीशु को (जैसा कि मैंने पहले कहा है) इस नए मूसा चरित्र के रूप में चित्रित किया जा रहा है और एक नए मूसा के रूप में वह इन प्रवचनों में अपनी शिक्षा प्रदान करता है। तो आपके पास जो है वह एसओएम या पर्वत पर उपदेश है, और जो होता है वह यह है कि मैथ्यू मार्क में एक या दो छंद लेता है, "स्वर्ग का राज्य निकट है, पश्चाताप करो और विश्वास करो," यही मार्क कहता है। मैथ्यू इसे लेते हैं और पर्वत पर उपदेश में इसका खुलासा करते हैं।

यदि आप में से किसी के पास बाइबिल में लाल अक्षरों वाला अनुवाद है जहां यीशु के शब्द लाल अक्षरों में हैं तो आपको पता होगा कि यह अध्याय 5, 6 और 7 में जाता है। आनंद के साथ शुरू होने वाले पूरे तीन अध्याय, "धन्य हैं वे जो आत्मा में गरीब हैं, धन्य हैं वे जो भूखे और प्यासे हैं, धन्य हैं आप जब लोग आपको सताते हैं, धन्य, धन्य..." वह नीचे जाता है और इसकी चर्चा करता है, प्रभु की प्रार्थना, "हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है, तेरा नाम पवित्र माना जाए" और पहाड़ी उपदेश, "न्याय न करें ऐसा न हो कि आप पर भी न्याय किया जाए।" अध्याय 7 में, सुनहरा नियम, "दूसरों के साथ वैसा

ही व्यवहार करें इससे पहले कि वे आपके साथ करें" - मेरा मतलब है "दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करें जैसा आप चाहते हैं कि वे आपके साथ करें

पर्वत पर उपदेश एक अद्भुत संदेश है, वैसे कुछ चर्च, अगर आप देश या दुनिया की यात्रा करते हैं, तो आप देखेंगे कि कुछ चर्च पवित्रशास्त्र के अलग-अलग अंशों पर ज़ोर देते हैं और मुझे पता है कि कुछ चर्च ऐसे हैं जो पर्वत पर उपदेश, पर्वत पर उपदेश, पर्वत पर उपदेश पर ज़ोर देते हैं - वे सिर्फ पर्वत पर उपदेश सिखाते हैं। अब पर्वत पर उपदेश अद्भुत है और यह यीशु की शिक्षा का सार है, और यह यीशु की शिक्षा से शुरू करने के लिए एक बढ़िया जगह है। लेकिन यीशु ने दूसरी चीज़ें भी सिखाईं और प्रेरितों ने चीज़ें सिखाईं, और पुराने नियम ने चीज़ें सिखाईं। इसलिए आपको पूरी बाइबल को ध्यान में रखना होगा, इसलिए आपको एक कैनन के भीतर एक कैनन को विशेषाधिकार देने के बारे में सावधान रहना होगा। जहाँ पवित्रशास्त्र के कुछ हिस्से हैं जिन्हें आप स्वीकार करते हैं और दूसरों पर ज़ोर देते हैं। इस कोर्स और इस क्लास में आप देखते हैं कि हम पवित्रशास्त्र को परमेश्वर के वचन के रूप में देखते हैं और हम इसमें से किसी को भी विशेषाधिकार नहीं देते हैं। उत्पत्ति महत्वपूर्ण है, मत्ती महत्वपूर्ण है, वे सभी महत्वपूर्ण हैं; वे सभी परमेश्वर के वचन का हिस्सा हैं, और आप जेम्स की पुस्तक पर रोमनों को प्राथमिकता नहीं देते। वे परमेश्वर के वचन हैं और इसलिए हम उन्हें, उन सभी को समझने की कोशिश करते हैं। पर्वत पर उपदेश वास्तव में एक विशेष पाठ है और अभूतपूर्व है, लेकिन फिर से मार्क में यह एक या दो छंद है, मैथ्यू में यह तीन अध्यायों तक आता है। इसलिए मैथ्यू मार्क के संक्षिप्त कथनों को विकसित करता है।

जी. यीशु के वचन और यीशु के कार्य [18:26-20:29]

सी: संयुक्त जीआई; 18:26-28:29; मत्ती। कार्यों को संक्षिप्त करता है और शब्दों को लंबा करता है

यीशु

मैथ्यू यीशु के शब्दों के साथ ज़्यादा क्यों करेगा जबकि मार्क यीशु के कामों के साथ ज़्यादा करता है? मैथ्यू यीशु के इन शब्दों और शिक्षाओं को विकसित करता है, ज़्यादातर इसलिए क्योंकि मुझे लगता है कि वह यीशु को नए मूसा के रूप में चित्रित करने की कोशिश कर रहा है - और मूसा

की शिक्षाएँ, पेंटाटेच, पाँच पुस्तकें, उत्पत्ति से व्यवस्थाविवरण तक बाइबल की पहली पाँच पुस्तकें। तो क्या होता है कि मैथ्यू इन यहूदियों के लिए यीशु का मॉडल बना रहा है, वह मूसा पर यीशु का मॉडल बना रहा है और मूसा पेंटाटेच और टोरा में और बाइबल की पहली पाँच पुस्तकों, उत्पत्ति से व्यवस्थाविवरण और माउंट सिनाई के साथ मूसा के संबंध में शिक्षा दे रहा है। हालाँकि, मार्क रोमन दर्शकों को लिख रहा है, इसलिए मार्क यीशु के कामों के बारे में ज़्यादा बताता है, यीशु ने यह किया और यीशु ने वह किया। यह हमें यीशु ने क्या सिखाया, इसके बारे में इतना नहीं बताता, यह हमें बताता है कि यीशु ने क्या किया और - वैसे, कुछ लोग शिक्षण पर ज़्यादा ध्यान केंद्रित करते हैं और कुछ लोग कामों और यीशु ने वास्तव में क्या किया, इस पर ज़्यादा ध्यान केंद्रित करते हैं। मार्क अपने दर्शकों की वजह से और मुझे लगता है कि वह खुद यीशु के कामों की दिशा में गया था। अंत में, मुझे लगता है कि आपको दर्शकों के बारे में पूछना चाहिए; मार्क के श्रोता रोमन अधिक प्रतीत होते हैं। वे रोमन पृष्ठभूमि से होने वाले कार्यों में अधिक रुचि लेंगे। यहूदी लोग यीशु की शिक्षाओं में अधिक रुचि लेंगे क्योंकि वे यीशु को महान रब्बी, रब्बी शिक्षक के रूप में देखते हैं। मैथ्यू पाँच प्रवचनों के इर्द-गिर्द यीशु की शिक्षाओं पर ध्यान केंद्रित करेगा। मैथ्यू की पूरी किताब इन पाँच प्रवचनों के इर्द-गिर्द बनेगी। मैं आपको जो सुझाव दे रहा हूँ, जैसा कि अन्य लोगों ने सुझाव दिया है और मैं बस इसे ही दोहरा रहा हूँ, वह यह है कि मैथ्यू ने जिन पाँच प्रवचनों को बनाया है, वे यीशु को नए मूसा के रूप में मॉडल करने के लिए बनाए गए हैं। मूसा के पास पाँच पुस्तकें थीं, उत्पत्ति, निर्गमन, लैव्यव्यवस्था, संख्याएँ और व्यवस्थाविवरण। मैथ्यू की पुस्तक में अब यीशु के पाँच प्रमुख उपदेश/प्रवचन हैं, इसलिए मुझे लगता है कि इन आंदोलनों के पीछे कारण हैं। मैथ्यू व्यवस्थित है।

एच. मैथ्यू संक्षेप में बताता है [20:29-25:09]

यह वास्तव में आश्चर्यजनक है; मैथ्यू वास्तव में संक्षिप्त है। फिर भी मैथ्यू की पुस्तक मार्क की पुस्तक से बहुत बड़ी है। आप मार्क में सब कुछ संक्षिप्त रूप में होने की उम्मीद करेंगे, यह बहुत छोटा और एक कर्नेल की तरह होगा। कर्नेल मार्क की पुस्तक में होगा, और मैथ्यू जो करेगा वह उस कर्नेल को पॉप अप करेगा और इसलिए हम मार्क में दो या तीन छंदों में जो देखेंगे, आप मैथ्यू में पूरे

अध्याय को पढ़ेंगे। आप उम्मीद करेंगे कि मैथ्यू उस कर्नेल को पॉप अप करेगा। यहाँ जो आपके पास है वह यह है कि जब यीशु के कार्यों की बात आती है तो ऐसा नहीं होता है।

तो, उदाहरण के लिए, हमारे पास राक्षसी लोग हैं, गदरिन राक्षसी लोग। यीशु इस आदमी के पास आते हैं - वह आदमी खुद को काट रहा है, काट रहा है, वह एक तरह का कटा हुआ व्यक्ति है। वह कब्रिस्तान में है; कोई भी उसे रोक नहीं सकता यीशु उसके पास जाता है और कहता है, "अरे, तुम इस आदमी में कौन हो?" वह आदमी कहता है, "ठीक है, हम एक सेना हैं," क्योंकि इस आदमी में बहुत सारे राक्षस हैं, वे एक सेना थे। उन्होंने यीशु से विनती की, "हमें बाहर मत निकालो या हमारे साथ कुछ भी बुरा मत करो। तुम हमें वहाँ उन सूअरों में क्यों नहीं डाल देते।" इसलिए यीशु ने दुष्ट सेना को सूअरों में डाल दिया और सूअर गलील की झील में भाग गए और मर गए।

यह लड़का, गदरीन का राक्षसी व्यक्ति वापस जाना चाहता है, वह यीशु के साथ जाना चाहता है और यीशु मना कर देते हैं। वह उससे कहता है कि वापस जाओ और बताओ कि परमेश्वर ने उसके लिए क्या महान कार्य किया है। कितनी शानदार कहानी है। इस कहानी के बारे में गाने हैं। कास्टिंग क्राउन या कुछ समूह गदरीन के राक्षसी व्यक्ति की कहानी गाते हैं। यह एक जबरदस्त कहानी है क्योंकि, एक अर्थ में, हम सभी तब तक राक्षसी हैं जब तक कि हम यीशु द्वारा मुक्त नहीं हो जाते। तो, लेकिन यहाँ जो दिलचस्प है वह यह है कि मार्क गार्गासेन के राक्षसी व्यक्ति और राक्षसों को सूअरों में डालने की कहानी बताता है और कहानी 326 शब्दों की है। मैथ्यू वही कहानी बताता है, जिसमें दो राक्षसी व्यक्ति हैं गडारिन -- वास्तव में मार्क ने जिस व्यक्ति के बारे में बताया है, उसके अलावा दो व्यक्ति हैं -- और कहानी केवल 134 शब्दों की है। इसलिए मैथ्यू मार्क की कहानी लेता है, जो तीन सौ से अधिक शब्दों की है, और इसे लगभग सौ शब्दों में संक्षिप्त कर देता है। इसलिए मैथ्यू मार्क की कहानी को लेता है, कहानी को विस्तृत करने के बजाय, यह कुछ ऐसा है जो यीशु ने सूअरों में दुष्टात्माओं को डालकर किया था, उसने कहानी को मार्क में जो है, उसके एक तिहाई तक सीमित कर दिया। इसलिए आप देख सकते हैं कि मैथ्यू यीशु के शब्दों को लेता है और उन्हें बढ़ा देता है लेकिन वह यीशु के कार्यों को लेता है और उन्हें उबाल देता है। इसलिए कहानी मार्क में जितनी है, उसका एक तिहाई है। वास्तविक बिंदु जो हम अब पावरपॉइंट पर बना रहे हैं वह यह है

कि मार्क में 326 शब्द हैं, एक दुष्टात्मा, मैथ्यू की पुस्तक में 134 शब्द और दो दुष्टात्माओं तक। मार्क यीशु के कार्यों पर ध्यान केंद्रित करता है, मैथ्यू यीशु के शब्दों पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है।

अब यहाँ एक और कहानी है जिसमें यीशु पानी पर चलते हैं। मरकुस के पास पानी पर चलते हुए यीशु की कहानी है। मरकुस में यह कहानी 139 शब्दों की है, इसलिए वह कहानी को 139 शब्दों में बताता है। मत्ती के अध्याय 14 में, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का सिर कलम किया जा रहा है, यीशु 5,000 लोगों को भोजन कराने जा रहे हैं और यीशु पानी पर चल रहे हैं। मत्ती हमें बताता है कि पतरस नाव से उतरकर यीशु के पास जा रहा है। फिर पतरस नाव में गिर जाता है और यीशु उसे बाहर निकालते हैं। इसलिए मत्ती ने पतरस के पानी में गिरने और यीशु द्वारा उसे बाहर निकालने के बारे में यह बात जोड़ दी है। लेकिन फिर भी, मत्ती में पतरस को जोड़ने के बाद कहानी 101 शब्दों की है, यह मरकुस से 40 शब्द कम लगती है। यह लगभग एक तिहाई कम है, साथ ही इसमें पतरस के बारे में एक कहानी भी है। इसलिए, फिर से, मत्ती यीशु के कार्यों पर कहानियों को समेटता है और उन्हें छोटा करता है। आप मत्ती में कहानी को बहुत लंबा होने की उम्मीद करेंगे क्योंकि मत्ती एक बहुत बड़ी किताब है लेकिन इसके बजाय कहानी छोटी है लेकिन वह पतरस के बारे में यह कहानी जोड़ता है।

अब सवाल यह है कि वह पीटर के बारे में वह कहानी क्यों जोड़ता है? पीटर अपने कम विश्वास के कारण गिर जाता है। वहाँ कुछ दिलचस्प बातें हैं, मुझे लगता है कि मैं आपको सिर्फ एक संकेत देना चाहता हूँ, मुझे लगता है कि पीटर एक संपूर्ण शिष्य है। मैथ्यू की पुस्तक में मुझे लगता है कि पीटर को संपूर्ण शिष्य के रूप में चित्रित किया गया है। पीटर अच्छा है, पीटर बुरा है और उसे दोनों तरह से चित्रित किया जाएगा, लेकिन वह इस तरह का प्रतिनिधि है, पीटर यह प्रतिनिधि शिष्य है। इसलिए वह वहाँ एक विशेष शिष्य होने के नाते उस भूमिका को लेता है।

I. पाँच प्रवचन - पर्वत पर उपदेश, 12 को भेजना और दृष्टांत... [25:09-28:29]

अब यहाँ मैथ्यू की पुस्तक है और मैं मूल रूप से यह दिखाना चाहता हूँ कि मैथ्यू की पुस्तक किस तरह ध्यान केंद्रित करती है, जिसे हम यीशु के पाँच प्रवचन या पाँच उपदेश कहते हैं। इसलिए

मैथ्यू में नया मूसा है और यहाँ एक अर्थ में नया पेंटाट्यूक है। इसलिए हमें यीशु का पहला बड़ा प्रवचन पर्वत पर उपदेश के रूप में मिलता है, यीशु की शिक्षाओं के तीन अध्याय आनंदमय वचनों से लेकर "तुमने पुराने समय में सुना है कि तुम व्यभिचार न करो, लेकिन मैं तुमसे कहता हूँ...तुमने पुराने समय में सुना है कि तुम हत्या न करो, लेकिन मैं तुमसे कहता हूँ, जो कोई भी बिना कारण अपने भाई पर क्रोध करता है, वह अपने दिल में पहले से ही हत्या कर चुका है।" इसलिए पर्वत पर उपदेश उन तीन अध्यायों में यीशु की शिक्षाओं के सारांश का एक जबरदस्त शिक्षण केंद्र बिंदु है। यह एक अभूतपूर्व उपदेश है, पर्वत पर उपदेश; प्रत्येक ईसाई को पर्वत पर उपदेश से बहुत परिचित होना चाहिए।

दूसरा, अध्याय 10 में एक प्रवचन है जहाँ यीशु बारह लोगों को भेजता है, अपने चित्र शास्त्र से याद रखें "12 को भेजता है।" वह बारह लोगों को बाहर भेजता है और उन्हें चेतावनी देता है कि जब वह वहाँ जाएगा तो उन्हें कठिन समय का सामना करना पड़ेगा। वह उन्हें केवल इस्राएल के घराने में भेजता है, फिर से इस्राएल, संभवतः यहूदी दर्शकों पर ध्यान केंद्रित करें। वह इस्राएल के लोगों के पास जाता है और मूल रूप से सुसमाचार फैलाता है - इसलिए वह सुसमाचार फैलाता है इसलिए वह 12 लोगों को भेजता है। फिर वह उन्हें नियुक्त करता है, और यह एक बहुत लंबा अध्याय है। अध्याय 10 में यीशु अपने शिष्यों को निर्देश देता है कि वे सुसमाचार फैलाने के लिए उसके गवाह के रूप में बाहर जाएँ।

अध्याय 13 एक बहुत प्रसिद्ध अंश है। पिक्चर स्क्रिप्चर में हमने इसे "राज्य के दृष्टांत: बीज और खरपतवार" कहा है। "ये यीशु के महान दृष्टांत हैं। मैथ्यू अध्याय 13 राज्य के दृष्टांत, वहाँ लगभग सात या उससे अधिक दृष्टांत हैं। कुछ बीज रास्ते पर गिरते हैं और मूल रूप से कुछ नहीं होता। उनमें से कुछ पथरीली ज़मीन पर गिरते हैं और थोड़े समय के लिए उगते हैं लेकिन उनकी कोई जड़ नहीं होती इसलिए जब सूरज की रोशनी पड़ती है तो वे सूख जाते हैं। कुछ कंटीली ज़मीन पर गिरते हैं, और वे कंटीली ज़मीन में उगते हैं और ऐसा लगता है कि वे वास्तव में अच्छा करेंगे लेकिन कांटे और खरपतवार उन्हें दबा देते हैं और इसलिए वे कुछ भी पैदा नहीं करते हैं। अंत में कुछ बीज ज़मीन पर गिरते हैं, और वे उगते हैं और साठ, एक सौ और पैदा करते हैं और स्वर्ग का

राज्य ऐसा ही है। वास्तव में लोग हमेशा कहते हैं कि यह बीज या बोने वाले का दृष्टांत नहीं है यह मिट्टी का दृष्टांत है जो विभिन्न प्रकार की मिट्टी के बारे में बताता है। मैं उन चीज़ों पर झगड़ा नहीं करना चाहता लेकिन मूल रूप से यह आपको परमेश्वर के वचन और लोगों के जीवन में इसकी प्रभावशीलता के प्रति विभिन्न प्रतिक्रियाओं को बता रहा है। आपके पास गेहूँ और जंगली घास का दृष्टांत है, आदमी जंगली घास बोता है और गेहूँ बोता है और वह चाहता है कि गेहूँ उगे। अचानक उसे एहसास होता है कि किसी दुश्मन ने वहाँ ये सारे खरपतवार बो दिए हैं; खरपतवार उग रहे हैं और वे शुरू में गेहूँ की तरह ही दिखते हैं। वह आदमी मालिक से कहता है, "अरे," "क्या हम खरपतवार को उखाड़ सकते हैं।" मालिक कहता है, "नहीं, खरपतवार को गेहूँ के साथ तब तक उगने दो जब तक कि कटाई का समय न आ जाए। कटाई के समय हम गेहूँ से खरपतवार को अलग कर देंगे और उन्हें जला देंगे।" आपको खरपतवार को जलाने की धारणा मिलती है; खरपतवार बुरे लोग हैं, गेहूँ अच्छे लोग हैं। तो आपको मैथ्यू अध्याय 13 में शिक्षा में ये सात दृष्टांत मिलते हैं, राज्य का दृष्टांत "बीज और खरपतवार।" वहाँ दृष्टांतों की कुछ बेहतरीन शिक्षाएँ हैं (यदि आप कभी दृष्टांतों में रुचि रखते हैं तो यह शुरुआत करने के लिए एक बढ़िया जगह है)।

जे. पाँच प्रवचन--सामुदायिक निर्देश (मत्ती 18) [28:29-31:37]

डी: संयुक्त जेएल; 28:29-37:03; मत्ती में पाँच प्रवचन।

मैथ्यू अध्याय 18 में, यीशु चर्च के समुदाय के भीतर संबंधों के बारे में बात करते हैं और यहाँ वे मुख्य रूप से बात करते हैं - यहाँ एक अन्यायी और निर्दयी सेवक के बारे में एक दृष्टांत भी है जिसने इस आदमी से अरबों डॉलर उधार लिए थे। वह उस आदमी के पास जाता है और कहता है, "कृपया मुझे उन अरबों डॉलर को माफ़ कर दें जो मैं तुम्हारा कर्जदार हूँ।" बड़ा मालिक कहता है, "मैं तुम्हें माफ़ करता हूँ।" फिर वह आदमी घर जाता है और एक आदमी उस पर दस डॉलर का कर्जदार होता है, और उस आदमी ने उस आदमी को जेल में डाल दिया। फिर मालिक वापस आता है और कहता है "तुमने मुझ पर अरबों डॉलर का कर्जदार किया और तुम उस आदमी को दस डॉलर भी माफ़ नहीं करोगे?" तो मालिक को उस आदमी से कुछ बड़ी समस्याएँ होती हैं। ये सामुदायिक निर्देश हैं, साथ ही, यह चर्च के समुदाय के भीतर संघर्ष के बारे में भी बात करता है।

मैथ्यूज एकमात्र सुसमाचार है जिसमें चर्च या *एक्लन्सिया का उल्लेख* है। तो जब चर्च में कोई विवाद होता है तो आप क्या करते हैं? चर्च में किसी के साथ आपका विवाद होता है तो आप क्या करते हैं? खैर, बेशक, आप गपशप करने जाते हैं, है न? - ओह, नहीं, नहीं, यीशु ने ऐसा नहीं कहा। तो आपके पास चर्च में दो लोग हैं जिनके बीच कोई समस्या है। आप क्या करते हैं? आप पहले उस व्यक्ति के पास जाते हैं। आप उस व्यक्ति से भिड़ते हैं और कहते हैं, "ठीक है, यह समस्या है," और फिर आप दोनों के बीच एक-एक करके समस्या को सुलझाने की कोशिश करते हैं।

वैसे, मैं हमेशा अपनी कक्षा को यह भी बताता हूँ, मैं एक व्यक्ति के साथ काम करता था, वह एक व्यवसायी व्यक्ति था एंथनी और मैं उसे हमेशा कहता रहता था, "जब भी आप कोई ईमेल करें, तो ईमेल में कभी भी नकारात्मक बातें न भेजें।" मूल रूप से यदि आपके पास किसी से कहने के लिए कुछ नकारात्मक है तो आपको उनसे आमने-सामने मिलना चाहिए। इसलिए यदि मुझे यहाँ गॉर्डन कॉलेज में या कहीं भी कोई समस्या है, यदि मुझे प्रोवोस्ट या डीन या किसी और से कोई समस्या है, तो मैं सीधे उस व्यक्ति के पास जाऊँगा और कहूँगा कि मुझे इस व्यक्ति से कोई समस्या है। मैं इसे ईमेल में नहीं डालने जा रहा हूँ, मैं फ़ोन करके नहीं कहूँगा, "अरे, यह मेरी समस्या है" - मैं व्यक्तिगत रूप से उस व्यक्ति के पास जाऊँगा और उससे बात करूँगा, मैं अपनी समस्या समझाऊँगा, यह क्या है, और हम इस बारे में बात करेंगे। इसलिए आमने-सामने, आप जाकर समस्या को हल करने का प्रयास करेंगे। यदि आप दोनों के बीच समस्या हल नहीं होती है तो आप अपने साथ दो या तीन लोगों को ले जाएँ और आप तीन लोगों को एक के पास ले जाएँ, और आप कुछ गवाहों के साथ आएँ। अन्य लोग जो समस्या को हल करने के लिए अपनी बुद्धि से मदद कर सकते हैं - इसलिए आप दो या तीन लोगों को लेते हैं और वापस जाते हैं और समस्या को हल करने की कोशिश करते हैं। यदि व्यक्ति अभी भी स्थिति को हल या समेट नहीं पाता है, तो आप इसे चर्च के सामने ले जाते हैं। चर्च एल्डर्स और डीकन या आपके चर्च में जो भी शामिल है, उससे बना होता है और आप इसे अपने चर्च और अपने चर्च के लोगों के सामने ले जाते हैं। यदि व्यक्ति चर्च की बात नहीं मानता है और यदि फिर भी कोई सुलह नहीं होती है, तो मूल रूप से उस व्यक्ति को बहिष्कृत करके चर्च से बाहर निकाला जा सकता है। तो यह प्रक्रिया है; एक पर एक, दो या तीन पर एक

सुलह करने की कोशिश करते हैं, पूरा चर्च एक पर सुलह करने की कोशिश करता है, यदि यह सुलह नहीं होती है तो उस बिंदु पर व्यक्ति को चर्च से बाहर निकाल दिया जाता है, बहिष्कृत कर दिया जाता है। यीशु यहाँ कुछ सामुदायिक निर्देश देते हैं, यह एक महान मार्ग है यदि आप कभी भी चर्चों या छोटे समूहों और चीजों में शामिल होते हैं। मसीह के शब्दों के अनुसार चीजों को इस तरह से किया जाना चाहिए।

K. पाँच प्रवचन - जैतून पर्वत प्रवचन [मत्ती 24-25] [31:37-37:03]

अंतिम प्रवचन जैतून का प्रवचन है, जो कि यीशु द्वारा जैतून के पहाड़ पर दिया गया संदेश है। जैतून का पहाड़ वह जगह है जहाँ गेथसेमेन का बगीचा है, आप में से कुछ ने यरूशलेम में खो जाने के कार्यक्रम का उपयोग किया है और जैतून के पहाड़ पर, यीशु वहाँ बहुत समय बिताएंगे। वैसे, यीशु प्रेरितों के काम की पुस्तक में जैतून के पहाड़ से ऊपर गए थे। वे जैतून के पहाड़ से स्वर्ग में चढ़ते हैं और जाहिर है, पुराने नियम से हम जानते हैं कि वे जैतून के पहाड़ पर वापस आने वाले हैं और जैतून का पहाड़ फटने वाला है। जैतून का पहाड़ यरूशलेम के ठीक पूर्व में एक बहुत प्रसिद्ध स्थान है। तो यरूशलेम में, मंदिर का पहाड़ यहाँ है, आप किद्रोन घाटी में नीचे जाते हैं, आप ऊपर आते हैं और यहाँ एक ऊँचा पहाड़ है, लगभग 2,700 फीट ऊँचा। यह जैतून का पहाड़ है और यह पूर्व में है। एक बार जब आप जैतून के पहाड़ पर चले जाते हैं तो आप रेगिस्तान में चले जाते हैं। तो दूर की तरफ, पूर्वी तरफ, यह सब रेगिस्तान है। जैतून का पहाड़ यहाँ है और यहाँ जैतून के बाग हैं, इसीलिए इसे जैतून का पहाड़ कहते हैं। वे वहाँ जैतून के साथ बहुत कुछ करते हैं। मैं खुद जैतून का बहुत बड़ा प्रशंसक नहीं हूँ, लेकिन वे जैतून को निचोड़ते हैं और उससे जैतून का तेल बनाते हैं। जब भी आप बाइबल में तेल देखते हैं - मुझे यकीन नहीं होता, सालों पहले एक भविष्यवाणी करने वाला वक्ता हमारे चर्च में आया था और वह कह रहा था कि उन्हें इज़राइल में तेल कैसे मिला, और वह आशेर के अंशों के साथ तेल के कुछ संदर्भों के बारे में यह कह रहा था, उत्पत्ति 49 में जहाँ आशेर तेल में अपना पैर डुबोता है। वह कह रहा था कि इज़राइल के तट पर उन्हें इतना सारा तेल मिलने वाला है और वह पेट्रोलियम तेल के बारे में बात कर रहा था। नहीं, मुझे खेद है, कोई भी जानता है कि जिसने पुराना नियम और नया नियम पढ़ा है, जब भी इसमें तेल, *शेमेन का उल्लेख*

होता है, तो यह जैतून के तेल के बारे में बात करता है। वे जैतून के तेल से सब कुछ करते हैं, वे इससे खाना बनाते हैं, और वे इससे अपने शरीर का अभिषेक करते हैं। वैसे, जब आप *मसीहा* कहते हैं, तो आप लोग "मसीहा" कहते हैं, मसीहा अभिषिक्त व्यक्ति है; आप जैतून के तेल से अभिषेक करते हैं। तो, अभिषिक्त व्यक्ति, उन्होंने अपने राजाओं का अभिषेक किया, उन्होंने अपने पुजारियों का अभिषेक किया, और उन्होंने अपने नबियों का अभिषेक किया। उन्होंने उनका जैतून के तेल से अभिषेक किया, वे *मसीहा* थे, अभिषिक्त लोग। वैसे नए नियम में, वह *मसीहा*, वह जैतून का तेल जिसका उन्होंने अभिषेक किया है वह *क्रिस्टोस* शब्द के रूप में आता है। तो *क्रिस्टोस* का ग्रीक में अर्थ है, अभिषिक्त व्यक्ति, हिब्रू में *मसीहा* का अर्थ है अभिषिक्त व्यक्ति। तो यह यीशु है, *याहशुआ क्रिस्टोस* (*क्रिस्टोस* का अर्थ है "अभिषिक्त व्यक्ति") इसलिए इसका अर्थ है यीशु, अभिषिक्त व्यक्ति। तो, वैसे भी, यह जैतून का तेल है। तो आपके पास जैतून का पहाड़ है जहां इनमें से बहुत सारे पेड़ यरूशलेम के पूर्व में दूसरी तरफ किद्रोन घाटी के पार उगाए गए हैं। यह मत्ती 24 और 25 में जैतून पर्वत का प्रवचन है, यह वही है जो भविष्य के बारे में बहुत कुछ कहता है।

इसलिए जैतून का प्रवचन भविष्य को देखने के तरीके के लिए बिल्कुल महत्वपूर्ण है और वह भेड़ और बकरियों के दृष्टांत के साथ न्याय के दिन के आने के बारे में बात करता है। आप जानते हैं, "जैसा तुमने इनमें से छोटे से छोटे के साथ किया है, वैसा ही तुमने मेरे साथ किया है।" वह 10 दुल्हन की सहेलियों के बारे में बात करता है, 5 बुद्धिमान थीं और 5 मूर्ख थीं। जब मूर्ख अपनी मशालों के लिए तेल लेने के लिए दौड़ रहे थे, तब स्वामी आया और 5 को स्वीकार कर लिया गया और बाकी 5 को अस्वीकार कर दिया गया। तो आपके पास प्रतिभाओं का दृष्टांत है। एक व्यक्ति को दस प्रतिभाएँ दी जाती हैं और वह उन प्रतिभाओं को कई गुना बढ़ा देता है। उस व्यक्ति को एक प्रतिभा दी जाती है, वह उसे जमीन में गाड़ देता है और स्वामी उससे बहुत नाराज होता है और उसे बाहर निकाल देता है। आपको भविष्य या आने वाले राज्य के बारे में जैतून के प्रवचन पर यीशु की ये विभिन्न शिक्षाएँ मिलती हैं।

इस स्लाइड का मुद्दा यह है कि मैथ्यू मैथ्यू की पूरी किताब इन पाँच प्रवचनों के इर्द-गिर्द बनी है। ये पाँच प्रवचन यीशु को नए मूसा, नए पेंटाटेच के रूप में चित्रित करते हैं, और मैथ्यू की किताब वास्तव में इसी तरह से संरचित है, ये वहाँ बड़ी बातें हैं।

अब, यह दिलचस्प है कि इनमें से प्रत्येक प्रवचन में, जब यह बंद होता है, तो यह इस वाक्यांश के साथ समाप्त होता है: "जब यीशु ने समाप्त किया था...." यह तब चलता है, जब यीशु ने यह समाप्त किया था और जब यीशु ने वह समाप्त किया था। यह उत्पत्ति की पुस्तक के समान ही है। आपको उत्पत्ति में याद होगा, आप में से कुछ के पास मेरे साथ पुराना नियम था, उत्पत्ति की पुस्तक में *टोलेडोथ* कथन ["यह ____ का विवरण है"]; यह एडम की वंशावली का विवरण है, यह नूह की वंशावली का विवरण है, यह शेम की वंशावली का विवरण है, और उनमें से दस हैं। "यह विवरण है " जो उत्पत्ति की पुस्तक को विभाजित करता है, यह इस व्यक्ति का विवरण है, उस व्यक्ति का विवरण है और इनमें से दस हैं जो उत्पत्ति की पुस्तक के *टोलेडोथ* को *विभाजित करते हैं*। यहाँ आपको ये कथन मिलते हैं जब यीशु ने इस भाग का अंत समाप्त किया और वह अगले पर चला गया, और फिर जब यीशु ने समाप्त किया और फिर उसने उसे समाप्त कर दिया। तो आप देखिए, अध्याय 7 के अंत में, माउंट पर उपदेश के अंत में, एक समापन *टोलेडोथ* है- अध्याय 11:1 श्लोक एक में एक समापन, यह बारह का भेजा जाना है, और इसलिए 11:1 वह कहानी समाप्त होती है। अध्याय तेरह श्लोक 53 में, राज्य के दृष्टांतों के अंत में, फिर से जब यीशु ने समाप्त किया और फिर वह आगे बढ़ता है। तो यह एक दिलचस्प समापन कथन है जिसका उपयोग मैथ्यू अपने प्रवचन अनुभागों को बंद करने के लिए करता है "जब यीशु ने समाप्त किया" और यह आगे बढ़ता है - वे सभी मूल रूप से उसी तरह समाप्त होते हैं।

एम. मेथोडिकल – मैथ्यू और ल्यूक [37:03-41:36]

E: संयुक्त MN; 37:03-45:38; मत्ती और लूका, याकूब

अब यहाँ एक और तुलना है, मैथ्यू ने वही इकट्ठा किया जो ल्यूक ने बिखेरा। अब मैं सिर्फ पहाड़ी उपदेश से एक उदाहरण लेना चाहता हूँ, मैं इस पर कोई बड़ा मुद्दा नहीं बनाना चाहता, यह सिर्फ दिलचस्प है। इसलिए मैं इन्हें यहाँ विभाजित करना चाहता था और बस आपको मूल रूप से

दिखाना चाहता था कि यहाँ क्या होता है। तो आपके पास मैथ्यू में पहाड़ी उपदेश है, यह सब अध्याय 5 से 7 में है। तो आपके पास है "तुम दुनिया के नमक हो" - नमक खराब है इसलिए तुम इसे फेंक देते हो। नमक ल्यूक 14:34 में पाया जाता है, लेकिन यह मैथ्यू अध्याय 5 में पाया जाता है। आपके पास आपकी मोमबत्ती है, "अपनी ज्योति लोगों के सामने चमकाओ," अपनी मोमबत्ती को बुशेल के नीचे मत छिपाओ, आप जानते हैं कि आप मोमबत्ती को बुशेल के नीचे नहीं रखते हैं आप इसे लैंप स्टैंड पर रखते हैं ताकि यह चमक सके। बुशेल के नीचे मोमबत्ती वाली बात लूका के अध्याय 8 में होती है। तो आप देखते हैं कि लूका में - अध्याय 14 में नमक और अध्याय 8 में मोमबत्ती को छह अध्यायों द्वारा अलग किया गया है, जबकि मैथ्यू में वे एक दूसरे के ठीक पीछे हैं - नमक और मोमबत्ती एक दूसरे के ठीक पीछे हैं। "शरीर के लिए प्रकाश आँख में है," लूका में जो मैथ्यू में अध्याय 11 में है, यह उसी माउंट पर उपदेश अध्याय 6 में है। लेकिन फिर से लूका अध्याय 14, अध्याय 8 और अध्याय 11 पर ध्यान दें। पूरी तरह से अलग अध्याय भी! ये बातें बिखरी हुई हैं; "मांगो और तुम्हें मिलेगा, खोजो और तुम पाओगे" मैथ्यू अध्याय 7, फिर से यह माउंट पर उपदेश का हिस्सा है। लूका की पुस्तक में जो अध्याय 11 श्लोक 9 में है, फिर से उस एक प्रवचन में किसी भी तरह के संदर्भ से अलग है और यह बिखरा हुआ है - इसलिए आप देख सकते हैं कि ये कहावतें लूका में बिखरी हुई हैं।

एक बात जो मुझे इस बिंदु पर कहनी चाहिए और यह स्पष्ट होनी चाहिए, क्या यीशु ने कभी एक ही उपदेश एक से अधिक बार दिया? जब मैं छोटा था, तो मुझे ब्रिस्टल, टेनेसी में बाइबल कॉलेज में पढ़ाया जाता था और जब मैं वहाँ था तो मैं एक सर्किट राइडिंग प्रचारक था और इसलिए हर रविवार को मैं एक अलग चर्च में उपदेश देता था। मेरे पास पाँच चर्च थे और फिर मैं उपदेश देता था। वैसे, क्या मैं अलग-अलग चर्चों में एक ही उपदेश देता? इसलिए मैं एक चर्च से दूसरे चर्च जाता और पाँच बार उपदेश देता। तो यह वास्तव में बहुत अच्छा था, आप एक बार उपदेश लिखते हैं और आप इसे पाँच बार उपदेश दे सकते हैं। मेरी पत्नी जो मेरे साथ यात्रा कर रही थी, ने कहा कि पहली बार बिल्कुल भयानक था। मैं अपनी पत्नी से प्यार करता हूँ; वह मेरे साथ ईमानदार है। इसलिए मैं इसे सह अनाज के साथ लेता हूँ जैसा कि वे कहते हैं, सालिस [नमक के एक दाने के साथ]। मेरी पत्नी ने कहा कि मेरा पहला प्रयास खराब था, इसका मतलब है कि मैं दुनिया का सबसे

अच्छा उपदेशक नहीं हूँ, यह पक्का है। इसलिए मैंने पहला उपदेश दिया, उसने कहा कि इसमें सुधार की आवश्यकता है, दूसरी बार यह बहुत बेहतर था। तीसरी बार, उसने कहा "तीसरी बार जब आपने उपदेश दिया तो आप बहुत बढ़िया थे, यह आपका सर्वश्रेष्ठ था और आप वास्तव में अच्छे थे।" चौथी बार और पाँचवीं बार, उसने कहा कि जब आपने पाँचवीं बार उपदेश दिया, तो उसने कहा, "मैं बता सकती हूँ कि आप वास्तव में अपने उपदेश से ऊब गए थे।" मैं जो कह रहा हूँ, अब यीशु अपने उपदेश से ऊब नहीं गए होंगे, लेकिन क्या यह बहुत संभव है कि जब यीशु एक स्थान से दूसरे स्थान पर गए, तो उन्होंने एक ही बात को एक से अधिक बार कहा और इसे विभिन्न संदर्भों में कहा। इसलिए जब आप नमक और यह और वह और बुशल के नीचे प्रकाश और अन्य चीजों को उद्धृत कर रहे हों तो आपको सावधान रहना होगा; यीशु ने कई अलग-अलग संदर्भों में ऐसा कहा होगा। आपको सावधान रहना होगा। हो सकता है कि लूका इसे एक संदर्भ से उद्धृत कर रहा हो और मैथ्यू दूसरे संदर्भ से, इसलिए आपको बस उन विवरणों पर शांत रहना चाहिए और इस बारे में इतना जुनूनी नहीं होना चाहिए कि सब कुछ एक ही लेंस से होना चाहिए। नहीं, यह सब कुछ एक ही लेंस से होने की ज़रूरत नहीं है, सुसमाचार अलग-अलग लेंस से आता है। यहाँ मुद्दा यह है कि मैथ्यू वही इकट्ठा करता है जो लूका बिखेरता है; लूका चीज़ें बिखेरता है, मैथ्यू व्यवस्थित है - वह चीज़ों को इकट्ठा करता है।

यह कथा और कालक्रम के बारे में क्या कहता है, क्या यह संभव है कि लेखक समय के अनुसार बिल्कुल कालानुक्रमिक रूप से नहीं लिख रहा है? क्या लेखक को हमेशा समय के अनुसार कहानी विकसित करनी होती है? नहीं, समय सिर्फ़ एक कारक है। हो सकता है कि लेखक कोई थीम विकसित कर रहा हो। हो सकता है कि उसके पास कोई थीम हो - इसलिए थीम को कालक्रम से ज़्यादा प्राथमिकता दी जाती है। इसलिए अगर आप कभी ऐसे लोगों के बीच रहे हैं जो कहानियाँ सुनाते हैं, तो कभी-कभी कालक्रम क्रम से बाहर हो जाता है क्योंकि वह जो कहना चाह रहा होता है वह कुछ और होता है। इसलिए मुद्दा मुद्दा बनाना होगा न कि कालक्रम स्थापित करना। इसलिए आपको पूछना होगा: कहानी का कार्य और उद्देश्य क्या है?

एन. मैथ्यू और जेम्स [41:36-45:38]

अब यह दिलचस्प है, मैंने एक लेख पढ़ा, मुझे लगता है कि यह स्टेनली पोर्टर द्वारा लिखा गया था, यह जेम्स द्वारा जेम्स और मैथ्यू की तुलना करने के बारे में था। अब, जेम्स की पुस्तक बाइबल में है, वहाँ नए नियम में। वैसे, जेम्स की पुस्तक को कुछ लोगों ने खारिज नहीं किया है। जेम्स और जॉन को याद करें, जेबेदी के बेटे, मछुआरे यीशु ने जेम्स और जॉन को बुलाया था? पीटर, जेम्स और जॉन अक्सर यीशु के साथ जाते थे जब यह विशेष और अकेले होता था, रूपांतरण के साथ या मृत लड़की को ठीक करने के लिए। इसलिए मूल रूप से उन्होंने पीटर, जेम्स और जॉन को आमंत्रित किया। जॉन के भाई जेम्स की चर्च में जल्दी मृत्यु हो गई, संभवतः 44 ईस्वी के आसपास, इसलिए जॉन का भाई जेम्स पहले शहीदों में से एक है। तो जेम्स मर चुका है। मैथ्यू के लिखे जाने से पहले, जॉन के लिखे जाने से पहले, वास्तव में इनमें से कुछ भी होने से पहले मर चुका है। वह एक प्रारंभिक शहीद है, वास्तव में जेम्स पहले शहीदों में से एक है।

यह एक और जेम्स है, यह पता चला है कि वह संभवतः यीशु का भाई है। मैथ्यू और अन्य स्थानों में, यह उल्लेख किया गया है कि जेम्स और आपके भाई यहाँ हैं - आप जानते हैं कि जेम्स और जोसेफ यहाँ आकर आपको लेने आए हैं। जेम्स को लगा कि यीशु कुछ समय के लिए पागल हो गया था लेकिन जाहिर तौर पर जेम्स ने यीशु को स्वीकार कर लिया और इसलिए जेम्स यीशु के भाई के रूप में लिखने जा रहा है। यह बहुत दिलचस्प है, जेम्स ने यीशु के भाई के रूप में बातें सुनी होंगी। यह बहुत दिलचस्प है और मैथ्यू की पुस्तक से बहुत मिलता-जुलता है और जेम्स की पुस्तक और मैथ्यू की पुस्तक के बीच यह ओवरलैप है। आप सोचेंगे कि वे दोनों हैं (वैसे, जेम्स शायद एक यहूदी संदर्भ में लिखा गया है, इसलिए वे एक आम श्रोता साझा कर सकते हैं। जेम्स कहते हैं, "धन्य है वह व्यक्ति जो परीक्षण के तहत बचाता है। खैर, यह दिलचस्प है, क्योंकि मैथ्यू कहता है, "धन्य हैं वे जो धार्मिकता के कारण सताए गए हैं।" तो आप देख सकते हैं कि वे बिल्कुल शब्द दर शब्द नहीं हैं, लेकिन वहाँ समानताएं हैं। यहाँ एक और है, और यह थोड़ा करीब हो जाता है, जेम्स कहता है "यदि कोई भी शब्द का श्रोता है और कर्ता नहीं है, तो वह उस व्यक्ति की तरह है जो दर्पण में अपना प्राकृतिक चेहरा देखता है।" तो यह अंतर शब्द के श्रोता और कर्ता के बीच है। मैथ्यू अध्याय 7, "हर कोई जो मेरे इन शब्दों को सुनता है और उन पर नहीं चलता है" शब्द सुनने और करने के

बीच अंतर " ... एक मूर्ख आदमी की तरह होगा जिसने अपना घर रेत पर बनाया।" बुद्धिमान व्यक्ति ने अपना घर चट्टान पर बनाया, मूर्ख व्यक्ति ने अपना घर रेत पर बनाया। बुद्धिमान व्यक्ति और मूर्ख व्यक्ति के बीच क्या अंतर है? मूर्ख व्यक्ति यीशु के वचनों को सुनता है परन्तु उन पर अमल नहीं करता, और इस प्रकार आपको मत्ती और याकूब के वचनों और कार्यों में वही विरोधाभास मिलता है।

यहां एक ऐसा है जो शायद उनमें से सबसे चौंकाने वाला है; जेम्स 5:12, "परन्तु इन सब में श्रेष्ठ बात यह है कि हे मेरे भाइयो, न तो स्वर्ग की, न पृथ्वी की, न किसी और वस्तु की शपथ खाओ, परन्तु तुम्हारी 'हां' का मतलब 'हां', और 'नहीं' का मतलब 'नहीं' हो, कि तुम दण्ड के योग्य न हो।" मैथ्यू क्या कहता है, इसे सुनिए, "परन्तु मैं तुम से [यह यीशु बोल रहा है] कहता हूं कि तुम शपथ न खाओ, परन्तु तुम्हारा कथन 'हां', 'हां' या 'नहीं', 'नहीं' हो।" तो आपको यह हां, हां और ये 'नहीं' मिलते हैं, शपथ न लें, शपथ न लें, जो जेम्स और मैथ्यू के बीच समानता को मजबूत करता है। इसलिए जेम्स और मार्क के बीच ये समानताएं, और मैथ्यू का ढह जाना, और मार्क के चमत्कारों द्वारा यीशु ने जो कहा उसके शब्दों का विस्तार करना दिलचस्प है

ओ. मैथ्यू की कहानी: प्रेरित [“ए”--शिष्यत्व] [45:38- 48:09]

एफ: संयुक्त ओएस; 45:38-59:16; मत्ती में प्रेरिताई [शिष्यत्व भाग 1]

अब मैं यहाँ स्विच करना चाहता हूँ और यह हमारे दूसरे विषय पर एक बड़ा स्विच है। तो मैथ्यू व्यवस्थित है, यह हमारा पहला अक्षर "एम" है। अब मैं उनके एक प्रमुख विषय पर स्विच करना चाहता हूँ और वह है प्रेरित करना, और यह शिष्यत्व के बारे में उनका प्रमुख विषय है। सबसे पहले, एक प्रेरित क्या है? एक प्रेरित एक भेजा हुआ व्यक्ति होता है - जिसे कमीशन दिया जाता है। तो प्रेरित शब्द का अर्थ है भेजना, *अपोस्टोलोस*, एक भेजा हुआ व्यक्ति। एक कमीशन या संदेश के साथ भेजा गया व्यक्ति। आम तौर पर एक राजा या कोई व्यक्ति एक प्रतिनिधि या राजदूत भेजता था जो उसकी इच्छाओं का प्रतिनिधित्व करता था। तो वह व्यक्ति एक भेजा हुआ व्यक्ति होगा, जिसे राजा के संदेश की घोषणा करने के लिए भेजा गया था।

इसलिए शिष्यत्व एक ऐसा विषय है जिस पर हम विचार करना चाहते हैं। ऐसा करते समय हम इस तरह के प्रश्न पूछेंगे: कोई व्यक्ति यीशु का शिष्य कैसे बनना शुरू करता है? यीशु का शिष्य होने का क्या अर्थ है? जैसा कि हमने पहले कहा, पतरस को मत्ती की पुस्तक में प्रमुखता से दर्शाया जाएगा। पतरस इतनी प्रमुख भूमिका क्यों निभाएगा? मुझे लगता है कि पतरस को इसलिए चित्रित किया जाएगा क्योंकि पतरस एक संपूर्ण शिष्य है। मत्ती शिष्यत्व के इस विषय को विकसित करना चाहता है और शिष्य होने का क्या अर्थ है। मुझे लगता है कि पतरस को उस शिष्यत्व के मॉडल के रूप में इस्तेमाल किया जाएगा।

मत्ती में पतरस के बारे में बहुत सी अनोखी कहानियाँ हैं और मुझे लगता है कि इसका कारण यह है कि पतरस एक तरह का निपुण शिष्य है। उदाहरण के लिए, मत्ती अध्याय 14 श्लोक 28 और उसके बाद पानी पर चलना। मरकुस में पतरस, हमने अभी पहले देखा, मरकुस में कहानी बताई गई है कि यीशु पानी पर चल रहे हैं। यीशु नाव में चढ़ जाते हैं और अपने शिष्यों को थोड़ा डांटते हैं। यीशु चलते हैं और नाव में चढ़ जाते हैं। मत्ती की पुस्तक में, पतरस वास्तव में नाव से बाहर निकलता है और यीशु के पास जाता है। पतरस - फिर से, मुझे लगता है कि यह यीशु के एक शिष्य को दिखाना चाहता था जो सब कुछ दांव पर लगा देता है, नाव से बाहर निकलने के लिए कदम बढ़ाता है, और पतरस पानी में गिर जाता है। यीशु उसे बाहर निकालते हैं और कम विश्वास के लिए उसे डांटते हैं। मत्ती एकमात्र व्यक्ति है जो पतरस के पानी में गिरने की कहानी बताता है, और इसलिए मुझे लगता है कि यह महत्वपूर्ण है।

प. पतरस चर्च की चट्टान के रूप में [48:09-50:58]

यहाँ एक और है; पीटर, चट्टान, शैतान। आप लोगों को मैथ्यू अध्याय 16 याद है, "तुम पीटर हो, पीटर, लोग मुझे कौन कहते हैं?" पीटर कहते हैं, "ठीक है, तुम मसीह हो, जीवित परमेश्वर का पुत्र।" यीशु कहते हैं, "तुम पीटर हो, कैफा," इसका मतलब है "चट्टान।" तुम पीटर हो, *पेट्रा*, चट्टान, "तुम पीटर हो, इस चट्टान पर मैं अपना चर्च बनाऊँगा।" मैथ्यू 16 में इस श्लोक पर प्रोटेस्टेंट और कैथोलिक के बीच एक बड़ी बहस है, "तुम पीटर हो, इस चट्टान पर मैं अपना चर्च बनाऊँगा।" रोमन कैथोलिक चर्च इसका उपयोग पीटर को एक कुरसी पर रखने के लिए करता है और मूल रूप से

उसे पोप और उससे निकलने वाले पापसी बनाता है - "तुम पीटर हो, इस चट्टान पर मैं अपना चर्च बनाऊँगा" उससे पापसी को हटाते हुए। प्रोटेस्टेंट ने कहा, "नहीं, पीटर वह चट्टान नहीं है जिस पर यीशु अपना चर्च बनाएगा बल्कि स्वीकारोक्ति थी।" यह पीटर की स्वीकारोक्ति है; "तुम जीवित परमेश्वर के पुत्र मसीह हो।" स्वीकारोक्ति वह चट्टान थी जिस पर यीशु अपना चर्च बनाएगा।

वास्तव में मुझे इनमें से कोई भी दृष्टिकोण पसंद नहीं है। मुझे लगता है कि वास्तव में पीटर ही चट्टान था और मैं मैथ्यू के इरादे पर वापस जाऊँगा और मुझे लगता है कि यहीं पर पीटर पूर्ण शिष्य है। पीटर पूर्ण शिष्य है, और इसलिए "पीटर वह चट्टान है जिस पर मैं अपना चर्च बनाता हूँ।" लेकिन वह खुद पीटर नहीं कह रहा है, बल्कि वह पीटर को एक शिष्य के रूप में कह रहा है। दूसरे शब्दों में, शिष्य वे हैं जिन पर "मैं अपना चर्च बनाऊँगा," और हम मसीह के शिष्य हैं। इसलिए मैं इसे शिष्यों और चर्च के शिष्यत्व का प्रतिनिधित्व करने वाले एक मॉडल के रूप में लूँगा और यही वह है जिस पर चर्च बनाया जाएगा। पीटर का उल्लेख इस विशेष बात में किया गया है, "तू पीटर है, इस चट्टान पर मैं अपना चर्च बनाऊँगा।"

वैसे, उसी अंश में भी, यदि लोग पतरस को बहुत ऊपर रखने की कोशिश करते हैं, तो आपको सावधान रहना होगा क्योंकि उसके बाद यीशु अपने शिष्यों के साथ समान व्यवहार करना शुरू कर देते हैं और कहने लगते हैं, "अरे, तुम लोग, मैं मरने जा रहा हूँ, मुझे सूली पर चढ़ाया जाएगा" और इस तरह की बातें। तो यह और भी गंभीर हो जाता है और पतरस यीशु को एक तरफ ले जाता है और उसे डांटता है, और कहता है, "यह तुम्हारे साथ नहीं होने वाला है, तुम्हें पता है, यह तुम्हारे साथ नहीं होने वाला है। तुम मसीहा हो...आदि।" वह यीशु पर भड़क जाता है और इसलिए यीशु कहते हैं, "शैतान मेरे पीछे हट जा।" तुम्हें पता है, "तुम मनुष्यों की बातों से चिंतित हो, न कि परमेश्वर की बातों से।" इसलिए यीशु पतरस को डांटते हैं और कहते हैं, "शैतान मेरे पीछे हट जा।" तो क्या, क्या पतरस भी महान शैतान बनने जा रहा है? मैं यही कह रहा हूँ, पतरस एक संपूर्ण शिष्य है, वह एक प्रतिनिधि शिष्य है और वह बस यह दिखा रहा है कि पतरस कुछ बहुत अच्छी टिप्पणियाँ करता है और पतरस कुछ बहुत बुरी टिप्पणियाँ करता है। तो वह एक शिष्य, मसीह का अनुयायी, एक प्रकार से प्रतिनिधि जैसा है।

प्रश्न: पतरस—मंदिर कर और यीशु को अस्वीकार करना [50:58- 51:39]

मंदिर कर, यह एक और ऐसा है जो मैथ्यू में अद्वितीय है, या मैथ्यू में इसका वर्णन किया गया है, "क्या आपका स्वामी मंदिर कर का भुगतान करता है?" इसलिए पतरस यीशु के पास जाता है और कहता है, "यीशु, क्या आप मंदिर कर का भुगतान करते हैं?" यीशु ने पतरस से कहा कि वह एक कांटा या कुछ और ले आए, नीचे जाकर वहाँ एक मछली पकड़ें, और इस मछली में से वह बस एक सिक्का निकालने जा रहा है। अब यह सिक्का आधा दीनार या एक शेकेल या कुछ और था; और मूल रूप से आधा सिक्का यीशु के लिए और आधा पतरस के लिए भुगतान करेगा। तो वह सिक्का आधा पतरस और आधा यीशु के लिए भुगतान करता है, और यह कहानी मैथ्यू की पुस्तक में बताई गई है। इसलिए मैथ्यू पतरस को इस तरह के प्रतिनिधि शिष्य के रूप में चित्रित करने जा रहा है और उसे पेश करने जा रहा है।

आर. मसीह को अस्वीकार करना [51:39- 56:33]

पुस्तक के अंत में पतरस का इनकार, पुस्तक के अंत में एक बहुत ही दुखद बयान, और मत्ती अध्याय 26 (मुझे देखने दो कि क्या मैं इसे खींच सकता हूँ, मत्ती अध्याय 26:69 और उसके बाद)। यह वास्तव में दुखद है, पतरस ने बहुत सारे महान कार्य किए। मूल रूप से, पतरस कहता है, "यीशु जहाँ भी तुम जाओगे, मैं भी जाऊँगा। नहीं, तुम मरने वाले नहीं हो और मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा।" पतरस तुम्हें याद है गेथसेमेन के बगीचे में, पतरस ने अपनी तलवार निकाली और महायाजक के नौकर का कान काट दिया। यूहन्ना हमें बताता है (जाहिर है वह उस आदमी को जानता था), यूहन्ना हमें बताता है कि उसका नाम मलखुस है। इसलिए पतरस ने मलखुस का कान काट दिया जो यीशु को गिरफ्तार करने के लिए बाहर आ रहा था। तब यीशु पतरस से कहते हैं, "पतरस अपनी तलवार रख ले...जो तलवार से जीते हैं, वे तलवार से मरते हैं"

तो स्पष्ट रूप से यह नीचे जा रहा है और अध्याय 26:69 और उसके बाद यह कहता है, "अब पतरस आंगन में बैठा था, वहाँ एक दासी थी जो उसके पास आई, और बोली, "तू गलील के यीशु के साथ था," उसने कहा। लेकिन उसने सबके सामने इनकार किया। "मुझे नहीं पता कि तुम किस

बारे में बात कर रहे हो' उसने कहा, और फिर वह प्रवेश द्वार पर गया और वहां एक और लड़की ने उसे देखा और वहां लोगों से कहा, 'यह व्यक्ति नासरत के यीशु के साथ था।' और उसने फिर से इनकार किया, 'मैं उस आदमी को नहीं जानती,' और थोड़ी देर में जो लोग पास खड़े थे उन्होंने कहा, 'निश्चित रूप से आप उनमें से एक थे; आपकी उच्चारण उन्हें बता देता है।' " यह ऐसा है जैसे, मैंने अभी एक लड़की से बात की जो लॉन्ग आइलैंड से है, जब वे लॉन्ग गिस्लैंड कहते हैं, तो आप जानते हैं कि वे लॉन्ग आइलैंड से हैं आप जानते हैं कि वे बोस्टन से हैं, और यदि वे कहते हैं, "आप सब लोग" और विशेष रूप से न्यू इंग्लैंड में, यहाँ हमें समस्या होती है जब कोई आता है और कहता है "आप सब लोग।" हम जानते हैं कि वे दक्षिण से हैं। यदि वे दक्षिण से हैं, तो आप जानते हैं कि क्या होता है, वे न्यू इंग्लैंड में, यहाँ बोस्टन क्षेत्र में ऐसा कहते हैं, और वे कहते हैं "आप सब लोग" उनका IQ बस 20 अंक कम हो गया, जहाँ तक लोगों की नज़रों में। लेकिन यदि वे कहते हैं, "हाँ दोस्त!" और वे ब्रिटिश लहजे में बात करते हैं, तो उनका IQ बस 20 अंक बढ़ गया, और इसलिए मैं हमेशा न्यू इंग्लैंड पर हंसता हूँ क्योंकि यह बहुत मज़ेदार है। यदि आप कहते हैं "आप सब लोग" आपका IQ कम हो जाता है और यदि आप कहते हैं "हाँ दोस्त" और आप ब्रिटिश बोलते हैं, तो आपका IQ बढ़ जाता है। यह बस एक तरह से विडंबना है। हालाँकि, उन्होंने कहा, "पीटर, हम जानते हैं कि आप कहाँ से हैं, आप गलील से हैं, क्योंकि हम आपका उच्चारण सुन सकते हैं और हम इसे कहीं भी पहचान सकते हैं।" पीटर ने कहा, "नहीं," और तीन बार प्रभु को अस्वीकार कर दिया।

यीशु का शिष्य होने का क्या मतलब है। यीशु का शिष्य तीन बार मसीह को अस्वीकार करता है? खुद से पूछने का सवाल है, "क्या यह पीटर है, या यह मैं हूँ?" ऐसे बिंदु हैं जहाँ मैं अपने जीवन को देखता हूँ और कहता हूँ, "मुझे इतना भरोसा नहीं है कि मैं मसीह को अस्वीकार नहीं करूँगा।" और इसलिए आप खुद से पूछते हैं, "मुझे मसीह को अस्वीकार करने का क्या कारण होगा?" ये बड़े सवाल हैं, और इसलिए मुझे लगता है कि सभी को मसीह को अस्वीकार करने के तथ्य का सामना करना चाहिए। क्या किसी को कोलोराडो के कोलंबिन में वह लड़की याद है। वे लोग छात्रों को मार रहे थे। वे बिल्कुल सीधे थे, और एक आदमी ने मूल रूप से कोलंबिन में इस लड़की पर बंदूक तान दी (यह एक सच्ची कहानी है), और कहा, "क्या तुम ईसाई हो? क्या तुम

ईसाई हो?" वह कहती है, "हाँ, मैं ईसाई हूँ," और वह ट्रिगर खींचता है और उसका सिर उड़ा देता है। यदि आपके सिर पर बंदूक तान दी जाए तो क्या आप मसीह को अस्वीकार करेंगे, क्या आप मसीह को अस्वीकार करते हैं? हम में से कई लोग छोटी-छोटी बातों में मसीह को नकार देते हैं, कितनी बार हम अपना मुंह बंद रखते हैं और यह नहीं कहते कि हम ईसाई अनुयायी हैं क्योंकि हम किसी से बहस में नहीं पड़ना चाहते? हम कुछ बहुत ही सूक्ष्म और कुछ बहुत ही सूक्ष्म तरीकों से मसीह को नकारते हैं - हम मसीह के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को नकारते हैं क्योंकि हम एक इंजीलवादी या इससे भी बदतर, एक कट्टरपंथी के रूप में नहीं देखे जाना चाहते हैं। हम एक कट्टरपंथी व्यक्ति के रूप में नहीं देखे जाना चाहते हैं; हम एक मध्यम मार्ग के व्यक्ति के रूप में देखे जाना चाहते हैं, जो फिट बैठता है, जो बहुत ही सूक्ष्म है, जो बहुत विचारशील है। इसलिए हम मसीह को नकारते हैं क्योंकि हम खुद को बुद्धिमान या कुछ और के रूप में चित्रित करना चाहते हैं। हमारी संस्कृति में, धर्म - मूल रूप से धर्मनिरपेक्ष संस्कृति ने धर्म को चुप करा दिया है। धर्म एक ऐसी चीज बन गई है जो बहुत ही व्यक्तिगत और निजी है और इसलिए हमारी संस्कृति में कुछ भी धार्मिक कहना बहुत गलत है क्योंकि यह बहुत ही व्यक्तिगत और निजी चीज है। इसलिए अमेरिका में सार्वजनिक रूप से अपने यौन जीवन के बारे में बात करना आपके धर्म के बारे में बात करने से आसान है। मुझे लगता है कि आपको इसके बारे में सोचने की जरूरत है, मुझे आश्चर्य है कि क्या वहां कुछ गड़बड़ है। वैसे भी, पतरस ने तीन बार प्रभु को अस्वीकार किया और यह मत्ती की पुस्तक में दर्ज है। इसलिए मत्ती की पुस्तक में पतरस एक विशेष शिष्य है, वह एक प्रतिनिधि शिष्य है - पूर्ण शिष्य।

एस. कॉल और वोकेशन [56:33-59:16]

आप मसीह के शिष्य कैसे बनना शुरू करते हैं? एक आह्वान या एक बुलावा होता है, एक बुलावा जो किसी बुलावे के लिए होता है। तो यहाँ दिलचस्प बात यह है कि रब्बियों के मामले में, अक्सर छात्र रब्बी के पास जाते और कहते, "आप जानते हैं कि मेरे SAT में 1500 अंक हैं, आपको मुझे अपना छात्र स्वीकार कर लेना चाहिए।" तो छात्र रब्बी के पास जाता और खुद को रब्बी को बेचने की कोशिश करता, और रब्बी इस छात्र को स्वीकार करता और उस छात्र को अस्वीकार कर

देता। यीशु ने ऐसा नहीं किया। यीशु ने छात्रों के आवेदन नहीं लिए, यीशु इन लोगों के पास तब गए जब वे अपने जीवन के बीच में काम कर रहे थे। पतरस और अन्द्रियास क्या कर रहे थे? वे मछली पकड़ने के जाल लगा रहे थे। यीशु उनके पास आए और कहा, "तुम लोग जाल डाल रहे हो और जो कुछ भी कर रहे हो, आओ और मेरे पीछे आओ।" एक बुलावा था और फिर एक प्रस्थान था। इसलिए उसने उन्हें बुलाया और उन्होंने अपने जाल छोड़ दिए। वह ज़ेबेदी के बेटों याकूब और यूहन्ना के पास आया, वे भी मछुआरे थे, और वह उनके साथ सफाई या कुछ करने की प्रक्रिया में उनके पास आया, और उसने उन्हें बुलाया। इसलिए याकूब और यूहन्ना अपने पिता ज़ेबेदी को छोड़कर मसीह का अनुसरण करते हैं। तो यह बुलावा है और यह छोड़ना है। यीशु उन्हें चीजों के बीच में बुलाता है।

क्या यीशु ने सबसे अच्छे और सबसे होशियार लोगों को बुलाया? यीशु ने इन मछुआरों को उनके काम के बीच में बुलाया, न कि रब्बी या विचारक के रूप में प्रशिक्षित। उसने इन लोगों को क्यों बुलाया? परमेश्वर इस दुनिया की मूर्खतापूर्ण चीजों का उपयोग उन चीजों को भ्रमित करने के लिए करता है जो बुद्धिमान हैं जैसा कि पॉल ने हमें कुरिन्थियों में बताया है। इसलिए यीशु का बुलावा बहुत महत्वपूर्ण है, वह जीवन के बीच में जाल डालने वाले साधारण लोगों को बुलाता है। ये लोग सुपर स्टार नहीं हैं। यीशु को - वास्तव में, कई बार उन्हें डांटना पड़ता है और कहना पड़ता है कि तुम लोग अभी भी इसे नहीं समझते। आप जानते हैं कि वह खमीर और फरीसियों के बारे में बात करना शुरू करता है और वे कहते हैं, "अरे नहीं! हम खाना लाना भूल गए।" तो वे चले जाते हैं और कहते हैं, "आप जानते हैं, हमने यह काम किया, हम जानते हैं कि यह वास्तव में मूर्खतापूर्ण था। हम खाना भूल गए और यीशु हमारे मामले में उलझ गए। वह इसे एक घुमावदार तरीके से कर रहा है।" वह वास्तव में फरीसियों के बारे में बात कर रहा है। यीशु कहते हैं, "तुम नहीं समझते, मैंने अभी 5,000 लोगों को खाना खिलाया, तुमने कितनी टोकरियाँ उठाई? मैंने अभी 4,000 लोगों को खाना खिलाया और तुमने कितनी टोकरियाँ उठाई? और तुम इस बात से चिंतित हो कि तुम्हारे पास पर्याप्त भोजन नहीं है, मैं खमीर और फरीसियों के बारे में बात कर रहा हूँ।" वह अपने शिष्यों को न समझने के लिए डांटता है। इसलिए कभी-कभी उसके शिष्य इसे समझ नहीं पाते और ऐसा इसलिए

होता है क्योंकि उन्हें वास्तव में उन प्रकार की चीज़ों के मामले में अच्छी तरह से प्रशिक्षित नहीं किया जाता है।

T. एक सच्चे शिष्य के गुण – न्यायालय [59:16- 61:13]

जी: संयुक्त टीवी; 59:16-68:00; शिष्यत्व/आज्ञाकारिता, भाग 2

तो यहाँ हमारा अगला बिंदु: मसीह के शिष्य के मुख्य गुण क्या हैं? मैं मसीह के शिष्यों के इन मुख्य गुणों के बारे में बात करना चाहता हूँ और मैं जो करना चाहता हूँ वह यह मूर्खतापूर्ण एक्रोस्टिक चीज़ है ताकि मैं इसे याद रख सकूँ लेकिन बस यह आपकी भी मदद कर सके। इसलिए मैं यहाँ मूल रूप से पाँच चीज़ों के बारे में बात करना चाहता हूँ जो एक शिष्य को दर्शाती हैं। पहला मुद्दा लागत [C] का होगा: शिष्यत्व की लागत। जैसे ही मैं यह कहता हूँ आप शिष्यत्व की लागत के बारे में सोच सकते हैं, और आप सोचते हैं, मुझे लगा कि मैंने डिट्रिच बोनहेफ़र नामक एक व्यक्ति द्वारा लिखी गई *द कॉस्ट ऑफ़ डिसिपलशिप नामक एक किताब सुनी है*। जब हम लागत को कवर करेंगे तो हम इसके बारे में थोड़ी बात करना चाहेंगे। शिष्यत्व की लागत; मुझे इसकी क्या कीमत चुकानी पड़ेगी?

आज्ञाकारिता [O] शिष्यत्व के प्रमुख गुणों में से एक है, मैथ्यू इसे विकसित करेगा। समझ [U] यह है कि शिष्य अपने गुरु को समझता है। यदि वह किसी का शिष्य बनने जा रहा है तो उसे समझना होगा कि उसकी शिक्षा क्या है। धार्मिकता [R] उन प्रमुख पहलुओं में से एक है जिसे मैथ्यू एक अनोखे तरीके से विकसित करेगा, वह धार्मिकता की धारणा होगी। शिष्यों को धार्मिक होना चाहिए, और वह हमें बताएगा कि उस धार्मिकता से उसका क्या मतलब है। अंत में सच्चे [T] और झूठे शिष्य होते हैं और इसलिए मैथ्यू की पुस्तक हमें चेतावनी देगी कि झूठे शिष्य होने का क्या मतलब है और क्या यह एक वास्तविक संभावना है। मैथ्यू झूठे शिष्यों के इस मुद्दे को सामने लाएगा और यह मर्मस्पर्शी होगा। फिर से आप देख सकते हैं कि मैथ्यू यहूदी लोगों को संबोधित कर रहा है जो शायद यीशु की शिक्षाओं को सुनकर ईसाई धर्म में आए थे और वे झूठे शिष्य बन गए, भटक गए। यह "न्यायालय" है, "न्यायालय" वहाँ एक्रोस्टिक है, न्यायालय, लागत, आज्ञाकारिता, समझ, धार्मिकता, और सच्चे और झूठे शिष्य।

उ. आज्ञाकारिता – जोसेफ [61:13-65:39]

तो चलिए पहले आज्ञाकारिता को देखते हैं। मत्ती 1:28 में यह मेरे लिए दिलचस्प है कि मत्ती अपनी किताब कैसे शुरू करता है? मत्ती 1 में, कौन खास व्यक्ति है? यह मरियम नहीं है; आप सोचते हैं कि मरियम ही वह व्यक्ति होनी चाहिए जिसे वहाँ खास तौर पर दिखाया गया है। यह मरियम नहीं है जिसे वहाँ खास तौर पर दिखाया गया है, यह वास्तव में यूसुफ है। अध्याय 1:18, "अब यीशु का जन्म हुआ, उसकी माता मरियम यूसुफ के साथ रहने के लिए प्रतिबद्ध थी। लेकिन उनके मिलने से पहले वह पवित्र आत्मा के द्वारा गर्भवती पाई गई। क्योंकि यूसुफ उसका पति एक धर्मी व्यक्ति था, (याद रखें कि हमने एक शिष्य के रूप में धर्मी कैसे कहा, यह दिलचस्प है कि यूसुफ को एक धर्मी व्यक्ति के रूप में चित्रित किया गया है) उसे सार्वजनिक अपमान में नहीं डालना चाहता था, उसने उसे चुपचाप तलाक देने के बारे में सोचा।" तो, यूसुफ के पास एक समस्या है: मरियम गर्भवती है और वह जानता है कि यह वह नहीं है। वह उसे चोट नहीं पहुँचाना चाहता इसलिए वह उसे चुपचाप तलाक देना चाहता है। वह इन चीजों के बारे में सोच रहा है; उसे एक समस्या है, यह पत्नी जिससे वह प्यार करता है, उसने सोचा कि यह शुद्ध सुंदर मरियम जो एक अद्भुत व्यक्ति थी, वह अब गर्भवती है। वह जानता है कि यह वह नहीं है, उसे एक बड़ी समस्या है। "लेकिन जब उसने इस पर विचार किया, तो प्रभु का एक दूत उसे एक सपने में दिखाई दिया और कहा, 'यूसुफ, दाऊद का पुत्र'" (आप वहाँ संबंध देख सकते हैं)। उसे यूसुफ दाऊद के पुत्र के रूप में संबोधित किया गया है। मैथ्यू की पुस्तक में कुछ प्रमुख बिंदु क्या होने जा रहे हैं? यह यीशु के राजा होने जा रहा है; यीशु मसीह दाऊद का पुत्र है। तो यूसुफ, दाऊद के पुत्र, मत्ती अध्याय 1 में वंशावली को याद रखें, "यूसुफ, दाऊद के पुत्र, मरियम को अपनी पत्नी के रूप में घर ले जाने से मत डर, क्योंकि जो उसके गर्भ में है वह पवित्र आत्मा की ओर से है...", यह आगे और बातें करता है, "... यह सब कुछ हुआ ताकि जो भविष्यद्वक्ता ने कहा था वह पूरा हो, 'देख, एक कुंवारी गर्भवती होगी, और एक पुत्र को जन्म देगी, और तुम उसका नाम इममानुएल रखना।'" यह कहता है, "जब यूसुफ जागा तो उसने ... (क्या, वह एक शिष्य है) ... जब यूसुफ जागा..." यूसुफ स्वर्गदूत की आज्ञा मानने वाला या अवज्ञाकारी होने वाला था, और स्वर्गदूत ने उससे कहा, यूसुफ यह ठीक है यह पवित्र

आत्मा की ओर से है; "यूसुफ जागा, उसने वही किया जो प्रभु के दूत ने उसे आज्ञा दी थी और मरियम को अपनी पत्नी के रूप में घर ले गया लेकिन जब तक उनके एक पुत्र नहीं हुआ तब तक उसने उसके साथ संबंध नहीं बनाया।" उसने उसका नाम यीशु रखा, यीशु का क्या मतलब है? यहोवा बचाता है, याहवेह बचाता है, प्रभु बचाता है, "क्योंकि वह अपने लोगों को उनके पाप से बचाने जा रहा है।" इसलिए अध्याय 1 में यूसुफ को ऐसे व्यक्ति के रूप में चित्रित किया गया है जो स्वर्गदूत का संदेश सुनता है और स्वर्गदूत जो कहता है वही करता है।

मैथ्यू अध्याय 28 में पुस्तक का अंत कैसे होता है? पुस्तक का अंत, मैथ्यू की पुस्तक का अंतिम अध्याय, एक बहुत प्रसिद्ध श्लोक, महान आदेश है। पुस्तक का अंत इस प्रकार है; "...11 शिष्य गलील (यह अध्याय 28:16 है) में उस पहाड़ पर गए जहाँ यीशु ने उन्हें जाने के लिए कहा था और जब उन्होंने उसे देखा तो उन्होंने उसकी पूजा की लेकिन कुछ को संदेह हुआ। और फिर यीशु उनके पास आया और कहा कि स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है इसलिए जाओ और शिष्य बनाओ।" शिष्यत्व की धारणा, "जाओ और शिष्य बनाओ [जैसा कि मैंने तुम्हें शिष्य बनाया था, तुम जाओ और उन्हें शिष्य बनाओ]। इसलिए जाओ और सभी राष्ट्रों के लोगों को शिष्य बनाओ [केवल यहूदी धर्म ही नहीं, यह फिर से व्यापक है] उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर बपतिस्मा दो और उन्हें सिखाओ [शिक्षण के मुख्य बिंदु पर ध्यान दें, मैथ्यू की पुस्तक में यीशु एक शिक्षक हैं] कि वे सब कुछ मानें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी है और निश्चित रूप से मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूँ युग के अंत तक।" महान आदेश, इसी तरह पुस्तक समाप्त होती है। इसलिए मैथ्यू ने शुरुआत में शिष्य के रूप में यूसुफ को दर्शाया है और लोगों की शिष्यता को बाहर जाकर यीशु के शब्दों और आदेशों का प्रसार करते हुए दिखाया है, और यह शिष्यता अंत तक है। पुस्तक इसी तरह से शुरू और समाप्त होती है, इसलिए ध्यान मरियम पर नहीं बल्कि यूसुफ पर है क्योंकि, मुझे लगता है, उसके शिष्यत्व पर। उसे निर्देश दिया गया है और वह आज्ञाकारी है।

V. मागी की आज्ञाकारिता (मत्ती 2) [65:39- 68:00]

मागी, एक और बात, ऐसा क्यों है कि मैथ्यू अकेले ही इन मागी का उल्लेख करता है, ये जादूगर पूर्व से आते हैं, ये ज्योतिषी "हमने पूर्व में एक तारा देखा है और हम उसकी पूजा करने आए

हैं"? मैथ्यू ही क्यों इन मागी का उल्लेख करता है? फिर से आपके पास यहाँ कई चीजें हैं। मुझे लगता है कि मागी गैर-यहूदी हैं और मुझे लगता है कि मैथ्यू यहूदी धर्म से परे गैर-यहूदियों तक सुसमाचार को फैलाना चाहता था। वह एक यहूदी समुदाय को लिख रहा है और वह व्यापकता दिखाना चाहता है और इसलिए वह मागी को तोड़ता है जो इसका हिस्सा है और अब्राहमिक वाचा की पूर्ति के रूप में है।

आप जानते हैं, डॉ मैथ्यूसन, जब वे मैथ्यू के इस हिस्से को पहली आयत के साथ पढ़ा रहे थे, तो यह बहुत दिलचस्प है। मैथ्यू की किताब की पहली आयत, “दाऊद की संतान यीशु मसीह का अभिलेख और वंशावली।” यीशु मसीह दाऊद के पुत्र हैं, जो इसराइल के राजा थे, लेकिन फिर वे “दाऊद के पुत्र, अब्राहम के पुत्र” भी थे। अब्राहम का ज़िक्र क्यों किया गया है? सबसे अधिक संभावना इसलिए है क्योंकि अब्राहम की वाचा में अब्राहम को तीन वादे दिए गए थे। क्या आपको उत्पत्ति 12 और उसके बाद की किताब याद है, अब्राहम को यहूदी राष्ट्र के पिता के रूप में तीन चीज़ों का वादा किया गया था, “हमारे पिता अब्राहम,” जैसा कि डॉ विल्सन की सबसे मशहूर किताब है। तीन चीज़ें: उसे ज़मीन का वादा किया गया था; उसे वंश का वादा किया गया था, कि उसका वंश आकाश के तारों और समुद्र के किनारे की रेत के समान बढ़ेगा, तीसरी बात, और यह मैथ्यू की पुस्तक के लिए वास्तव में महत्वपूर्ण है और मुझे लगता है कि मैथ्यू इस बात पर प्रकाश डाल रहा है कि यीशु मसीह अब्राहम का पुत्र है और यीशु मसीह के माध्यम से यह सभी राष्ट्रों तक जाएगा। अब्राहम के माध्यम से पृथ्वी के सभी राष्ट्र धन्य होंगे। अब्राहम के लिए वाचा है: भूमि, बीज और सभी राष्ट्रों के लिए आशीर्वाद। यह यीशु के माध्यम से है कि यह अब्राहमिक वाचा तब विस्तारित होती है। इसलिए हम वास्तव में इन सभी पुराने नियम के विषयों पर काम कर रहे हैं लेकिन अब्राहमिक वाचा यीशु मसीह में अपनी पूर्णता पा रही है जो वास्तव में इसे लागू करेंगे और इसे उड़ा देंगे।

डब्ल्यू. बेथलेहम में शिशुओं का नरसंहार [68:00-71:48]

H: संयुक्त WY; 68:00-81:08; शिष्यत्व भाग 3

तो ज्योतिषी भी इसका हिस्सा हैं और वे आज्ञाकारी लोगों के रूप में आते हैं। देवदूत ज्योतिषियों के सामने प्रकट होता है और कहता है, "हेरोदेस के पास वापस मत जाओ, हेरोदेस बकरी को मारना चाहता है, दूसरे रास्ते से वापस जाओ।" और ज्योतिषी परमेश्वर के वचन के आज्ञाकारी हैं। तो यहाँ फिर से आपको ज्योतिषियों के साथ आज्ञाकारिता का वही विचार मिलता है जो आपको जोसेफ के अध्याय 1 और यहाँ अध्याय 2 में मिला था। जोसेफ के साथ, हेरोदेस बच्चे को मारना चाहता है, और ज्योतिषियों के साथ वह बेथलेहम में शिशुओं को मारने जा रहा है - सावधान भी रहें। जब मैं छोटा था, तो मुझे लगता था कि बेथलेहम एक बहुत बड़ा शहर है और हेरोदेस वहाँ जाता है और दो साल से कम उम्र के सभी शिशुओं को मार देता है और आप इन सैकड़ों शिशुओं के मरने के बारे में सोचते हैं, और मैं इसे बिल्कुल भी कम नहीं करना चाहता, हेरोदेस ने जो किया वह वास्तव में बुरा था। मैं जो कह रहा हूँ वह यह है कि बेथलेहम इतना छोटा है कि यह गॉर्डन कॉलेज परिसर में समा सकता है। बेथलेहम के शिशुओं की हत्या संभवतः बारह साल से कम उम्र के बच्चों की थी। दूसरे शब्दों में, अगर आपके पास दो सौ लोग हैं तो आप दो साल से कम उम्र के कितने शिशुओं को जन्म देंगे, ज़्यादातर लोग सोचते हैं कि दस या बारह बच्चे मारे गए। ऐसा नहीं है कि उसने हज़ारों लोगों को मारा और इसलिए ईमानदारी से कहूँ तो, ऐतिहासिक रूप से इसका ज़िक्र भी नहीं किया जाता क्योंकि यह एक छोटी सी बात थी। अब, अगर आपका बच्चा बारह बच्चों का है तो भी बारह बच्चे ही हैं, लेकिन मुझे लगता है कि आपको इसे यहाँ परिप्रेक्ष्य में रखना चाहिए। बेथलेहम एक छोटा शहर है। पुराने और नए नियम में कई बार उन्होंने "शहर" शब्द का इस्तेमाल किया और मुझे पता है कि मेरे अनुवाद में उन्होंने इसे "शहर" शब्द के साथ करने की कोशिश की। क्योंकि अमेरिका में शहर से हमारा मतलब न्यूयॉर्क शहर, बोस्टन और फिलाडेल्फिया, मियामी या एलए या ऐसा ही कुछ है। इसलिए जब हम "शहर" के बारे में सोचते हैं तो हम इन बड़े शहरी केंद्रों के बारे में सोचते हैं लेकिन ये वास्तव में छोटे शहर थे, जहाँ दो सौ लोग रहते थे, तीन या चार सौ या उससे भी ज़्यादा।

यूसुफ को बताया गया कि हेरोदेस उसके पीछे आने वाला है, उसे छोड़कर मिस्र चला जाएगा। इसलिए यूसुफ मरियम और बच्चे को लेकर मिस्र चला जाता है। फिर क्या होता है? वह

मिस्र से बाहर निकलता है और नासरत तक जाता है, वह यहूदिया वापस नहीं जाता बल्कि नासरत चला जाता है। यह बहुत दिलचस्प है कि जब वह मिस्र से बाहर जाता है तो मिस्र से कौन निकलता है? आपको इसके सभी संकेत मिलते हैं। अब यीशु, उसका जन्म, मिस्र से बाहर ले जाया जाता है और नासरत जाता है। मिस्र से कौन निकलता है? मूसा मिस्र से बाहर आता है। यीशु नया मूसा है, और इसलिए यीशु मिस्र से बाहर आता है, तब भी जब मूसा मिस्र से बाहर आता है। तो इस तरह के बहुत सारे संकेत हैं। फिर भी, यूसुफ स्वर्गदूत द्वारा बताई गई बातों का पालन करता है और यहाँ बात आज्ञाकारिता की है।

हेरोदेस, यह पता चलता है, एक निश्चित अर्थ में आज्ञाकारी भी है। इसमें कहा गया है कि हेरोदेस द्वारा बच्चों को मार दिए जाने के बाद भी, यह यिर्मयाह से उद्धृत करता है, "इस प्रकार यिर्मयाह के भविष्यवक्ता की कही गई बात पूरी हुई, "राहेल, अपने बच्चों के लिए रो रही है और उसे सांत्वना नहीं मिलेगी क्योंकि वे नहीं थे।" यह कहाँ है, राहेल की कब्र बेथलेहम के बाहर रिज रूट पर है जो बेथलेहम से ठीक एक मील बाहर जाती है। यह रूट 95 की तरह एक प्रमुख मार्ग है जो उत्तर और दक्षिण की ओर जाता है - वास्तव में 95 की तरह नहीं, बल्कि रूट 1 की तरह - वहाँ पहाड़ों की रिज के साथ उत्तर और दक्षिण की ओर जाता है। इसलिए राहेल की कब्र बेथलेहम के बाहर है क्योंकि वह वहीं मरी थी और इसलिए राहेल अपने बच्चों के लिए रो रही थी, वह एक संरक्षक संत की तरह थी, और इसलिए यह यिर्मयाह की पुस्तक को उद्धृत करता है और उसका हवाला देता है। हेरोदेस ने अपने विनाशकारी कार्य को करते हुए भी, एक अर्थ में शास्त्रों का आज्ञाकारी रहा है न कि एक शिष्य के रूप में बल्कि फिर भी एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जो वहाँ परमेश्वर के वचन को पूरा करता है।

X. इमिटाटियो - गुरु की तरह बनना [71:48-77:33]

महान आदेश, हमने सभी राष्ट्रों में सुसमाचार के प्रसार और यहूदी धर्म से परे सभी राष्ट्रों में अब्राहमिक आशीर्वाद के प्रसार के बारे में बात की। अब, यहाँ कुछ छोटी-छोटी बातें हैं। मैं मैथ्यू अध्याय 10:24 में इसे देखना चाहता था, और मैं शिष्य के विचार को प्रस्तुत करना चाहता हूँ जिसे मैं " इमिटाटियो " कहता हूँ। *इमिटाटियो* का अर्थ है अनुकरण करना। छात्र शिक्षक की नकल करता

है। अगर मैं लकड़ी बनाना सीखता हूँ और मैं एक मास्टर बढ़ई के अधीन अध्ययन कर रहा हूँ और बढ़ई मुझे दिखाता है कि बोर्ड को कैसे काटना है और इसे कैसे समतल करना है। फिर मैं इसे स्वयं करने का प्रयास करता हूँ और मैं मास्टर की नकल करता हूँ। मैं मास्टर की नकल करता हूँ ताकि सीख सकूँ कि बोर्ड को कैसे समतल करना है जैसा कि वह करता है।

मेरा एक बेटा था जिसे बास्केटबॉल खेलना बहुत पसंद था। हम इंडियाना में रहते थे और इंडियाना में सिर्फ़ एक ही खेल था और वह था बास्केटबॉल, और बस यही। मैंने अपने जीवन में कभी ज़्यादा खेल नहीं देखे, मैं हमेशा खेल खेलना पसंद करता था। मैंने खेल खेले, मैंने ह्यूटन कॉलेज में बास्केटबॉल खेला जब मैं अपने पहले साल में वहाँ गया था और उसके बाद नहीं खेला क्योंकि उसके बाद मैं इसे वहन नहीं कर सकता था। लेकिन मैंने वहाँ तीन सीज़न बास्केटबॉल और टेनिस खेला। इसलिए जब मेरा बेटा बड़ा हो रहा था तो हम हर रात बास्केटबॉल के सैकड़ों शॉट मारने जाते थे, और हम अलग-अलग जगहों से शॉट मारते थे। मैं उसे हर जगह से दस शॉट मारने और हर रात पच्चीस फ़ाउल शॉट मारने के लिए कहता था। यह मज़ेदार था, यह बिल्कुल पिता-पुत्र जैसा रिश्ता था।

मेरे बेटे को टेलीविज़न पर बास्केटबॉल देखना पसंद था और यह 90 के दशक या 1990 के दशक की बात है। मुझे टेलीविज़न पर खेल देखना पसंद नहीं है और अब भी नहीं है। लेकिन हम बैठ गए और हमने इस लड़के को बास्केटबॉल खेलते हुए देखा, और वह बास्केटबॉल खेलता था और मैं इस आदमी को बास्केटबॉल खेलते हुए देखता था और मुझे विश्वास नहीं हो रहा था कि मेरी आँखें क्या देख रही थीं, कोई भी ऐसा नहीं कर सकता। वह जो कर रहा था वह असंभव था, यह बस "हे भगवान, यह आदमी ऐसा कैसे कर सकता है?" और उसका नाम माइकल जॉर्डन था, और वह मेरे जीवन में अब तक देखे गए सबसे अविश्वसनीय बास्केटबॉल खिलाड़ियों में से एक था, जिसे मैंने तब से कभी नहीं देखा। इसलिए हमारे परिवार ने एक अनुष्ठान विकसित किया जहाँ हम बैठते थे और माइकल जॉर्डन और शिकागो बुल्स को खेलते हुए और कोच फिल जैक्सन को खेलते हुए देखते थे। हम माइकल जॉर्डन को बास्केटबॉल खेलते हुए देखते थे और यह अविश्वसनीय था।

मेरा बेटा, फिर, माइकल जॉर्डन के स्टंट करता था। मेरा बड़ा बेटा छलांग लगा सकता था, वह वास्तव में कूद सकता था। वह उन कुछ गोरे लोगों में से एक था जो कूद सकते थे, और वह कूद सकता था। वह माइकल जॉर्डन की कलाबाजियाँ सबसे अच्छे तरीके से करता था, और मैं हमेशा उसे कमतर आंकता था और कहता था, "ज़ैक ऐसा मत करो, तुम माइकल जॉर्डन नहीं हो, तुम यह सब नहीं कर सकते इसलिए कोशिश भी मत करो।" फिर भी वह माइकल जॉर्डन को देखता था; जॉर्डन उसका मॉडल था इसलिए यह नकल चल रही थी, यह डबल रिवर्स लेप जैसी चीज़ थी, वह ऐसा करने की कोशिश करता था।

जब वह न्यू हैम्पशायर में पोर्ट्समाउथ क्रिश्चियन अकादमी में था, तो कई लोग मेरी पत्नी और मेरे पास आए और कहा, "हम हमेशा आपके बेटे को बास्केटबॉल खेलते देखना पसंद करते हैं क्योंकि वह अजीबोगरीब हरकतें करता है और अक्सर सफल भी होता है।" उसे वास्तव में न्यू हैम्पशायर में ऑल-स्टेट टीम में खेलने का मौका मिला। मुझे याद है कि हमारे आखिरी खेलों में से एक में, मैंने उससे सौ डॉलर की शर्त लगाई थी कि वह डंक नहीं कर सकता क्योंकि वह 5'10" या 5'11" लंबा है और उसने मुझसे कहा कि वह डंक कर सकता है लेकिन मुझे यकीन नहीं हुआ, वह इतना ऊंचा नहीं कूद सकता, मैंने सोचा। उसने गेंद चुराई और उसके सामने एक आदमी था, और क्या बात है कि आपको हमेशा गेंद को सामने वाले व्यक्ति को कोर्ट में पास करना चाहिए। उसने गेंद चुराई और मैं बस इतना बता सकता था कि उसने रिम को देखा और कहा कि यह आज रात है, इसलिए उसने तेजी से ड्रिबल किया और गेंद को पास भी नहीं किया और उसने उस रात डंक कर दिया। उस रात मुझे पता चला कि आप इस तरह से दांव नहीं लगाते - और मैं सौ डॉलर सस्ता हो गया। अब आप कहते हैं कि यह आपके बेटे के बारे में सिर्फ एक मज़ेदार कहानी है, तो मुद्दा यह है कि वह अपने शिक्षक की नकल कर रहा था जो उसका शिक्षक है? यह मैं नहीं था। यह माइकल जॉर्डन था, और इसलिए वह सीखता और माइकल जॉर्डन की तरह चालें करने की कोशिश करता और इससे उसे प्रेरणा मिलती।

तो यहाँ यीशु कहते हैं, मैं आपको यह पढ़कर सुनाता हूँ, मत्ती अध्याय 10:24; यीशु अपने बारह शिष्यों को भेज रहे हैं, और वे कहते हैं, "यदि घर के मुखिया का नाम बेलज़ेबूब है (जब यीशु

की निंदा की गई, तो उन्होंने कहा कि यदि वह दुष्टात्माओं को निकालता है तो यह बेलज़ेबूब द्वारा होना चाहिए। उन्होंने कहा कि यदि वे मेरे बारे में ऐसा कहते हैं, तो घर के सदस्य, दूसरे शब्दों में, आप लोग, मुझे बेलज़ेबूब कहते हैं, और कहते हैं कि मैं बेलज़ेबूब द्वारा संचालित हूँ, और इसलिए आप भी इसे प्राप्त करने जा रहे हैं। इसलिए छात्र शिक्षक से ऊपर नहीं है और इसलिए इस तरह की बात यीशु के साथ आती है। और इसलिए वे कहते हैं कि छात्र के लिए अपने शिक्षक जैसा होना ही पर्याप्त है। यह इस अनुकरण का हिस्सा है; छात्र को अपने शिक्षक जैसा होना चाहिए, अगर हम यीशु मसीह के शिष्य बनने जा रहे हैं, तो हमें अपने शिक्षक जैसा होना चाहिए।

मैथ्यू अध्याय 10:24 में यह धारणा है, अब यह रूढ़िवाद बनाम रूढ़िवादी का विचार है। यहीं पर यीशु फरीसियों का उपयोग करते हैं और फरीसियों के बारे में कहते हैं, वे कहते हैं कि फरीसियों के भी अपने शिष्य हैं। फरीसियों और रब्बियों के भी अपने शिष्य थे।

Y. विश्वासियों का भाईचारा, पदानुक्रम नहीं [77:33-81:08]

वह कहते हैं कि मैथ्यू अध्याय 23:10 में, वैसे मैथ्यू अध्याय 23:10 में, यीशु फरीसियों के विरुद्ध, आप इस अंश को अच्छी तरह से जानते हैं। यह है: "हे कपटी शास्त्रियों और फरीसियों, तुम पर हाय, तुम कटोरे के बाहर से तो साफ करते हो, परन्तु कटोरे के अन्दर से मैला है।" मैथ्यू अध्याय 23 में यीशु फरीसियों पर कटाक्ष कर रहे हैं, "हे शास्त्रियों और फरीसियों, तुम पर हाय।" अध्याय 23:8 में यह कहा गया है, "परन्तु तुम रब्बी न कहलाना, क्योंकि तुम्हारा एक ही स्वामी है, और तुम सब भाई हो। रब्बी न कहलाना, तुम सब भाई हो, और कोई तुम्हें पिता न कहे, क्योंकि तुम्हारा एक ही पिता है, जो स्वर्ग में है। न ही तुम्हें शिक्षक कहलाना चाहिए।" और इसीलिए मैं हमेशा अपने छात्रों से कहता हूँ कि तुम मुझे "शिक्षक" न कहो, तुम मुझे "प्रोफेसर" कहो। अब आप वास्तव में देख सकते हैं, मुझे खेद है, मैं समझाता हूँ, यह एक व्यंग्यात्मक टिप्पणी थी। मुझे नहीं लगता कि यह मुद्दा था, मुद्दा यह नहीं है कि मुझे "प्रोफेसर" कहा जाए, मुझे "शिक्षक" न कहा जाए क्योंकि यीशु ने कहा था कि मुझे "शिक्षक" न कहा जाए, मुझे नहीं लगता कि यह मुद्दा है। खैर, चलिए आगे बढ़ते हैं और देखते हैं कि मुद्दा क्या है: "न ही आपको शिक्षक कहा जाएगा क्योंकि आपके पास एक शिक्षक है, मसीह", *क्रिस्टोस*, मसीहा, अभिषिक्त व्यक्ति। "तुम में सबसे बड़ा तुम्हारा सेवक होगा" और

मुझे लगता है कि यही मुद्दा है। ईसाई धर्म एक बहुत ही सपाट धर्म है। हमारे पास कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है जिसे आप पिता कहें, कोई ऐसा व्यक्ति जिसे आप रब्बी कहें, जिसका आप सम्मान करते हैं, "ओह हाँ, पिता रब्बी, मुझे सिखाएँ" और इस तरह की बातें। नहीं, ईसाई धर्म बहुत सपाट है, जिसमें कोई बड़ा पदानुक्रम नहीं है।

मेरा बेटा अलग-अलग कंपनियों में काम करता था और एक समय पर उसके ऊपर पाँच बॉस थे और उसके ऊपर प्रबंधन की पाँच परतें थीं। समस्या यह है कि वह प्रोग्रामिंग करता था और सारा काम करता था और ये पाँच प्रबंधक, फिर उनमें से कुछ ने जो कुछ भी था उसे प्रबंधित करने के अलावा कुछ भी नहीं किया, लेकिन उसे सारा काम करना पड़ा। ईसाई धर्म ऐसा नहीं है; प्रबंधन की ये परतें नहीं हैं, नहीं आप सभी भाई हैं।

जो सबसे बड़ा है वह सबसे छोटा है, यीशु अपने शिष्यों को लेता है और वह क्या करता है - मैं शिक्षक हूँ, मैं पिता हूँ, मैं मसीह हूँ, अभिषिक्त व्यक्ति ? और मसीह, पिता, अभिषिक्त व्यक्ति क्या करता है, वह नीचे जाता है और कहता है, "अपने जूते उतारो" और वह उनके पैर धोता है ताकि उन्हें दिखा सके कि सबसे बड़ा व्यक्ति सभी का सेवक होना चाहिए। यही शिष्यत्व है, शिष्यत्व धर्म में "पवित्र व्यक्ति" होने का दर्जा प्राप्त करना नहीं है। इसलिए, यीशु के राज्य में, जो सबसे ऊपर है वह वही है जो सेवा करता है और पैर धोता है और गंदे काम करता है और नीच काम करता है। यह वह व्यक्ति नहीं है जो शीर्ष पर बड़ा काम करता है। और मुझे कभी-कभी डर लगता है कि हमने प्रबंधन का एक मॉडल लिया है और इसे चर्च में डाल दिया है। अब अचानक चर्च में हमारे पास प्रबंधन की ये सभी परतें हैं और यीशु, "अब आप सभी लोग मसीह के भाई और बहन हैं।" सत्ता संरचना का यह स्तरित सामान क्या है? चर्च ऐसा नहीं है, आप सभी भाई हैं और आप में सबसे बड़ा व्यक्ति सबका सेवक होगा। चर्च की संरचना के बारे में यह एक बहुत ही दिलचस्प टिप्पणी है।

Z. रूढ़िवाद बनाम रूढ़िवादी: जैसा वे कहते हैं वैसा करो, जैसा वे करते हैं वैसा नहीं [81:08-84:56]

I: संयुक्त Z-AA; 81:08-88:15; ऑर्थोडॉक्सी/ ऑर्थोप्रॉक्सी

तो यह रूढ़िवाद है, रूढ़िवादिता मुझे बस - मैं वहाँ दूसरी आयत भूल गया जो यह कहती है; "फरीसियों की बात मानो [वह उन्हें फरीसियों के बारे में बताता है], लेकिन जो वे करते हैं वह मत करो। फरीसियों की शिक्षाओं का पालन करो, लेकिन जो वे करते हैं वह मत करो।" तो मूल रूप से वह कह रहा है कि फरीसी पाखंडी हैं क्योंकि वे सही बात सिखाते हैं लेकिन वे सही काम नहीं करते। वह कह रहा है, "तुम मेरे शिष्य हो तुम सिखाओ और करो।" शब्दों को जानना ही काफी नहीं है, तुम्हें इसे करना भी होगा। तो यह केवल रूढ़िवादिता नहीं है। और मैं ऐसे कई संदर्भों में रहा हूँ जहाँ वे खुद को इस बात के लिए महत्व देते हैं कि वे पवित्रशास्त्र से मसीह के शुद्ध सिद्धांत, वास्तविक सिद्धांत को मानते हैं। रूढ़िवादिता वास्तव में महत्वपूर्ण है और हमारे बारे में, मसीह के बारे में, हमारी दुनिया के बारे में पवित्रशास्त्र पर आधारित संपूर्ण सच्चा सिद्धांत। वे चीजें बहुत महत्वपूर्ण हैं। रूढ़िवादिता बहुत महत्वपूर्ण है लेकिन इसे सोचने के सच्चे तरीकों और करने के सच्चे तरीकों से भी जोड़ा जाना चाहिए।

दूसरे शब्दों में, ईसाई धर्म सिर के बारे में है, हाँ, और वैसे, ईसाई धर्म सिर्फ दिल के बारे में नहीं है। ईसाई धर्म हमारे सिर और चीजों के बारे में सोचने के तरीके के बारे में है, यह हमारे दिल के बारे में भी है, लेकिन यह हमारे हाथों के बारे में भी है, हम क्या करते हैं, सिर्फ हम क्या सोचते हैं, सिर्फ हम क्या महसूस करते हैं, बल्कि हम अपने हाथों से क्या करते हैं। सिर, दिल और हाथ सभी शिष्य बनने के लिए प्रतिबद्ध हैं, वे जो कहते हैं उसका पालन करें लेकिन वे जो करते हैं उसे न करें।

तो ईसाई धर्म एक भाईचारा है और यही उन्होंने कहा था और इसलिए विनम्रता - शक्ति नहीं - मसीह के शिष्य होने का हिस्सा है। मसीह का शिष्य वह है जो विनम्र है, शक्ति और उस तरह की सभी चीजों में नहीं। मैंने अक्सर अपने छात्रों से कहा है कि तीन बुरी चीजें हैं: पैसा, सेक्स और शक्ति। लोग आपको इन तीन बुरी चीजों से सावधान रहने के लिए कहते हैं: पैसा, सेक्स और शक्ति। अब सेक्स: सेक्स न करें। यह गंदा है; अगर आप सेक्स करते हुए पकड़े गए - आप जानते हैं कि संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति जॉन एफ कैनेडी से लेकर नीचे तक हमें कितनी सारी समस्याओं का सामना करना पड़ा है। सेक्स न करें; यह गंदा है, आप उजागर हो जाते हैं, इस तरह के संदर्भों में सेक्स बुरा है। पैसा; मैंने अक्सर कहा कि मैं गॉर्डन कॉलेज में पढ़ाता हूँ, आपको अपने

छात्र ऋणों के बारे में चिंता करने की ज़रूरत नहीं है। हम पर क्या बकाया है, अमेरिका में 15 ट्रिलियन डॉलर? पैसे की चिंता न करें, आपके पास कभी भी कुछ नहीं होगा इसलिए पैसे की चिंता न करें। साफ-सुथरा क्या है? पैसा, सेक्स और शक्ति; साफ-सुथरा क्या है? यह वास्तव में शक्ति है। शक्ति सूक्ष्म होती है; यह शुद्ध होती है। और जब किसी व्यक्ति के पास शक्ति होती है तो दूसरे लोग उसके पास चले जाते हैं। शक्ति वह चीज है जिसकी तलाश की जाती है, यह शुद्ध पाप है और इसलिए मैं जो कह रहा हूँ वह यह है कि यह सबसे सूक्ष्म है और इसलिए सबसे घातक है। इसलिए लोग कहते हैं कि मैं सेक्स नहीं करना चाहता, मैं पैसा नहीं कमाना चाहता, क्योंकि यह बुरा लगता है, शक्ति ही खेल का नाम है। आप बहुत से लोगों को शक्ति के पीछे भागते देखेंगे और मैं बस इतना ही कह रहा हूँ कि "सावधान रहें।" और जीसस कहते हैं, "नहीं, मेरे लोग सेवक हैं।" यह विनम्रता की बात है, इसे हम स्क्रीन पर उल्टा राज्य कहते हैं। इस दुनिया के राज्य में राजा और उसके सभी प्रतिनिधि और उसके अधीन लोग हैं। मसीह के राज्य में, राजा जो बन जाता है वह सभी का सेवक होता है।

ए.ए. परमेश्वर की इच्छा पूरी करना: बुद्धिमान/मूर्ख लोग, यीशु का परिवार [84:56- 88:15]

बुद्धिमान और मूर्ख में क्या अंतर था? बुद्धिमान और मूर्ख व्यक्ति में क्या अंतर था ? बुद्धिमान व्यक्ति ने अपना घर चट्टान पर बनाया जबकि मूर्ख व्यक्ति ने अपना घर रेत पर बनाया - मत्ती अध्याय 7:24। इसने उन दोनों को अलग कर दिया, इसे देखें, मैं आपके लिए यह श्लोक पढ़ता हूँ, "जो कोई भी मेरे इन शब्दों को सुनता है और उन पर अमल नहीं करता, वह उस मूर्ख व्यक्ति के समान है जिसने अपना घर रेत पर बनाया..." इसलिए मसीह, फिर से, इस बात पर जोर दे रहे हैं कि एक शिष्य को वचन का पालन करने वाला होना चाहिए न कि केवल सुनने वाला, जेम्स की पुस्तक की तरह लगता है।

यहाँ एक और है जो मुझे लगता है कि आश्चर्यजनक है, और यह यीशु के परिवार के साथ है। क्या आपको मैथ्यू अध्याय 12 में याद है, यीशु वहाँ बाहर हैं और वे यीशु के पास आते हैं और कहते हैं, "यीशु आपका परिवार बाहर है, और वे आपसे मिलना चाहते हैं।" आप उनसे क्यों नहीं मिलते?" वह अपने शिष्यों की ओर इशारा करते हुए कहते हैं, "ये मेरी माँ और मेरे भाई हैं।" अब यीशु की माँ

और भाई कौन हैं? वह यहाँ हमें स्पष्ट रूप से बताता है, यीशु के परिवार का हिस्सा होने का क्या मतलब है? अब यह उसकी माँ या उसके भाइयों पर कोई आरोप नहीं है, क्योंकि जेम्स जेम्स की पुस्तक लिख रहा होगा, और जूड जूड की पुस्तक लिख रहा होगा, और वे यीशु के भाई हैं, और मरियम, निश्चित रूप से परमेश्वर द्वारा अत्यधिक अनुग्रहित थी। क्या यीशु, अंत तक भी, अपनी माँ मरियम का ख्याल रखता है? जॉन की पुस्तक में यीशु क्रूस पर है; शिष्य कहाँ हैं? शिष्य डर कर भाग रहे हैं। यीशु के मरने के समय यीशु के पैरों के पास कौन है? यह महिलाएँ हैं, मरियम। मैं शपथ लेता हूँ कि नए नियम में आधी महिलाओं का नाम मरियम, मरियम मगदलीनी है... लेकिन वह क्रूस से नीचे देखता है और अपनी माँ मरियम को देखता है, और कहता है, "जॉन," वह कहता है, "अरे, प्रिय शिष्य, तुम उसका ख्याल रखना।" यहाँ तक कि अपनी मृत्यु में भी, वह अपनी माँ के लिए चिंतित है। इसलिए यीशु अपनी माँ को बिल्कुल भी नीचा नहीं दिखा रहे हैं, लेकिन वे जो कह रहे हैं वह यह है कि मेरी माँ कौन है। यीशु एक नया परिवार बनाते हैं, और वे कह रहे हैं कि यीशु के परिवार में आने के लिए क्या करना पड़ता है। यीशु यहाँ बताते हैं कि शिष्य बनने और उनके परिवार में शामिल होने के लिए प्रवेश की क्या आवश्यकताएँ हैं जो कोई भी मेरे पिता की इच्छा पर चलता है वह मेरे भाई, बहन और माँ में स्वर्ग है।" ध्यान दें कि यह कहता है, "प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करो और तुम बच जाओगे," क्या यह ऐसा ही कहता है - नहीं। यह ऐसा नहीं कहता है, यह कहता है "जो कोई भी मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है वह मेरा भाई, बहन और माँ है।" तो आपको यहाँ फिर से रूढ़िवादिता पर जोर मिलता है, न कि रूढ़िवादिता पर। वह जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है... तो यह वास्तव में एक महत्वपूर्ण बात है और ये कुछ कठिन बातें हैं।

ए.बी. मत्ती बनाम लूका में धार्मिकता [88:15-91:33]

जे: AB-AD को मिलाएं; 88:15-99:42

यीशु धार्मिकता के बारे में क्या कहते हैं? यहाँ धार्मिकता की यह योजना है, हम जानते हैं कि यूसुफ को एक धार्मिक व्यक्ति माना जाता था और इसलिए हमें धार्मिकता की यह धारणा मिलती है। हम कैसे साबित करते हैं कि मैथ्यू धार्मिकता की इस धारणा पर जोर दे रहा है? आप ऐसा कैसे कर सकते हैं, मैथ्यू की तुलना दूसरे सुसमाचारों से करके। तो इसे देखें: लूका अध्याय 12:31, और यहाँ

यह लिखा है, "परन्तु पहले उसके राज्य की खोज करो और ये चीज़ें भी तुम्हें दे दी जाएँगी।" और आप कहते हैं, "मुझे यह इस तरह याद नहीं है," क्योंकि हममें से ज्यादातर को मैथ्यू अध्याय 6 में पीछे से यह आयत याद है। ध्यान दें कि मैथ्यू अध्याय 6 में कहाँ लिखा है, "परन्तु उसके राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज करो..." और आप देखते हैं कि मैथ्यू ने "धार्मिकता" शब्द कैसे जोड़ा है, लूका उसे छोड़ देता है और कहता है, "परन्तु उसके राज्य की खोज करो और ये चीज़ें भी तुम्हें दे दी जाएँगी।" मैथ्यू कहता है, "परन्तु उसके राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज करो और ये चीज़ें भी तुम्हें दे दी जाएँगी।" इसमें धार्मिकता पर जोर दीजिए और उसे शामिल कीजिए, धार्मिकता और राज्य के बीच संबंध पर ध्यान दीजिए।

अब यहाँ एक और आयत है जिसमें इसी तरह की बात कही गई है, "धन्य हो तुम जब लोग तुमसे घृणा करते हैं, जब वे तुम्हें बाहर निकालते हैं और मनुष्य के पुत्र के कारण तुम्हारा अपमान करते हैं..." और यह लूका अध्याय 6:22 में इस तरह से लिखा गया है। यहाँ मैथ्यू भी इसी तरह की खुशियाँ देता है। "धन्य हैं वे जो धार्मिकता के कारण सताए जाते हैं..." और इसलिए आपको यहाँ यह कथन मिलता है, "धार्मिकता के कारण" जैसा कि आप देख सकते हैं कि इसे यहाँ जोड़ा गया है। इसलिए मैथ्यू शिष्यों की सच्ची प्रकृति और धार्मिकता पर जोर दे रहा है।

यहाँ एक और है, और यह दिलचस्प है क्योंकि लूका लोगों और गरीबों की मदद करने और उस तरह की चीज़ों के बारे में बात कर रहा है। वह अनाथों, विधवाओं और गरीबों के बारे में बहुत सचेत है। लूका कहता है, "धन्य हैं तुम जो अब भूखे हो, क्योंकि तुम तृप्त होगे।" यहाँ ध्यान दें कि यह केवल उन लोगों के बारे में बात कर रहा है जो भूखे हैं, ऐसा लगता है कि गरीबों के पास भोजन नहीं है और वे भूखे हैं। ध्यान दें कि मैथ्यू उसी श्लोक के साथ क्या करता है, "धन्य हैं वे जो धार्मिकता के लिए भूखे और प्यासे हैं," वह इसे एक तरह से लेता है और फिर धार्मिकता की धारणा को उजागर करता है, "क्योंकि वे भरे जाएँगे," क्योंकि "वे तृप्त होंगे।" तो जैसा कि आप देख सकते हैं मैथ्यू धार्मिकता की इस प्रकृति पर जोर देता है।

ए.सी. बेहतर धार्मिकता: सिर से दिल तक [91:33-96:55]

तो आप इन अंतरों का हिसाब कैसे देते हैं? मैथ्यू एक विषय बनाने की कोशिश कर रहा है, यीशु मसीह की धार्मिकता। यूसुफ उनके पिता एक "धार्मिक व्यक्ति" थे, यीशु के शिष्यों को "उनकी धार्मिकता के लिए भूखे और प्यासे रहने" की ज़रूरत है। अब यीशु एक गहरी धार्मिकता की तलाश में जाते हैं; और यीशु इसे सिर से हृदय तक ले जाते हैं। तो आपको यीशु से इस तरह के कथन मिलते हैं, "तुमने सुना है कि कहा गया है, व्यभिचार मत करो....", अब हर कोई कहता है, "मैंने कभी व्यभिचार नहीं किया, मेरा कभी तलाक नहीं हुआ।" "तुमने सुना है कि कहा गया है कि व्यभिचार मत करो, लेकिन मैं तुमसे कहता हूँ कि जो कोई भी किसी स्त्री को देखता है, वह अपने दिल में व्यभिचार कर चुका है।" तो व्यभिचार, अब, दस आज्ञाओं से आपके पास है, "तू चोरी नहीं करेगा, तू लालच नहीं करेगा, तू झूठ नहीं बोलेगा, तू कोई हत्या नहीं करेगा, तू व्यभिचार नहीं करेगा।" यह दस आज्ञाओं में से एक है, लेकिन यीशु कहते हैं कि अगर कोई पुरुष किसी स्त्री को देखता है और उसके लिए वासना करता है, तो वह अपने दिल में पहले से ही व्यभिचार कर चुका है। इसका मतलब यह है कि इस कमरे में मौजूद हर व्यक्ति व्यभिचारी है, जिसने अपने दिल में वासना के साथ एक महिला को देखा है, कम से कम सभी पुरुष? तो यह बड़ी बात है। तो यीशु कानून को लेकर उसे दिल में डाल रहे हैं।

इसी तरह, वह नीचे कहता है कि, "तुमने पुराने समय में यह कहा सुना है, हत्या मत करो। लेकिन मैं तुमसे कहता हूँ कि जो कोई बिना कारण अपने भाई पर क्रोध करता है, वह अपने मन में हत्या कर चुका है।" क्रोध बहुत सारी हत्याओं की जड़ है, यीशु कहते हैं कि हमें इसे समझना होगा, हृदय में यही है। यह ज़रूरी नहीं है कि आप क्या करते हैं, यह आप क्या सोचते हैं; और यह आप कौन हैं। तो क्रोध हत्या का बीज है। तो यीशु क्यों कह रहे हैं कि सभी क्रोध गलत हैं? नहीं। पुराने नियम में परमेश्वर क्रोधित हो जाता है; नए नियम में यीशु क्रोधित हो जाता है; प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में यीशु क्रोधित हो जाता है। मुझे लगता है कि यह पॉल में है, "क्रोध करो और पाप मत करो।" क्रोध हत्या की ओर ले जा सकता है, इसलिए वह कहता है कि यदि आपने अपने दिल में क्रोध किया है।

एक बार की बात है, एक दशक से ज़्यादा समय तक मैंने मिशिगन सिटी में इंडियाना स्टेट

जेल में अधिकतम सुरक्षा वाली जेल में पढ़ाया। मैं ग्रेस कॉलेज में पढ़ाता था और फिर रात में अपनी कार में बैठकर मिशिगन सिटी में इंडियाना स्टेट जेल जाता और रात में कुछ घंटों के लिए वहाँ आधी नींद में पढ़ाता और फिर घर वापस आ जाता। लेकिन लोग हमेशा पूछते थे, "तुम जेल में इन लोगों से कैसे जुड़ सकते हो?" और जवाब है, मैं जेल में लोगों से इसलिए जुड़ सकता हूँ क्योंकि, तुम कहते हो कि ये लोग बड़े घर में हैं, अधिकतम सुरक्षा, चालीस फ़ीट की दीवारें, दस फ़ीट मोटी। मुझे लगता है कि यह 1865 में खुला था, इसलिए यह वाकई पुराना और जीर्ण-शीर्ण है और ये बड़ी दीवारें हैं। मैं उनसे कैसे जुड़ सकता हूँ? खैर, जीसस ने कहा कि अगर तुम अपने भाई पर गुस्सा करते हो, तो अपने दिल में तुम पहले ही हत्या कर चुके हो। तो इस जेल में मेरे दोस्त हैं जो हत्यारे हैं, और तुम कहते हो कि तुम इन हत्यारों से कैसे जुड़ सकते हो? क्योंकि मैं वही हूँ। मैंने कभी किसी को नहीं मारा लेकिन अंदर से मैंने भी अपराध किया है। व्यभिचार के लिए, इनमें से कुछ लोग बलात्कार के लिए वहाँ हैं, मैंने एक महिला को वासना की दृष्टि से देखा है लेकिन जब मैं जेल में जाता हूँ तो क्या वे लोग मुझसे इतने अलग होते हैं? नहीं, वे मेरे भाई हैं; क्योंकि मैं समझता हूँ कि उन्होंने जो किया उसकी जड़ें मुझमें भी हैं। यीशु ही एकमात्र कारण है जिसके कारण मैं बाहर हूँ।

तो मैं जो कह रहा हूँ, वह यह है कि यीशु पाप की धारणा को दिल में डाल रहे हैं ताकि हर कोई दोषी हो जाए ताकि यीशु उन्हें बचाए। यीशु का मुख्य मिशन क्या है, उनके नाम का क्या अर्थ है, "यहोवा बचाता है।" किससे बचाता है? उनका नाम यीशु है क्योंकि "वह अपने लोगों को उनके पापों से बचाएगा।" यही यीशु करता है, वह लोगों के पापों के लिए मरने आया है। यही मसीह का मुख्य बिंदु है। कभी-कभी आधुनिक संस्कृति में ऐसा लगता है कि अब हम सुसमाचार के संदेश को गरीबों की मदद करने के संदेश पर स्थानांतरित कर रहे हैं। सामाजिक सुसमाचार सामाजिक न्याय के मुद्दे - इसलिए हम सामाजिक न्याय के मुद्दों के बारे में बहुत बात करते हैं और मुझे आश्चर्य होता है कि क्या हम इस बिंदु को भूल रहे हैं, कि यीशु लोगों को उनके पापों से बचाने के लिए आए थे। अब हम लोगों को बता रहे हैं कि सुसमाचार एक सामाजिक न्याय का मुद्दा है और मैं लोगों से कह रहा हूँ, "नहीं, यीशु लोगों को उनके पापों से बचाने के लिए आए थे।" हमें पहले इसे समझने की ज़रूरत है और हमें इस पर मुख्य ध्यान देने की ज़रूरत है। लेकिन पिछले 20, 30, 40, 50 सालों में

हमारी संस्कृति में एक सूक्ष्म बदलाव आया है। अब, मैंने जो कहा वह भी कुछ लोगों को बहुत अपमानजनक लगेगा क्योंकि मैं यीशु के मूल आह्वान पर वापस जा रहा हूँ, कि वह अपने लोगों को उनके पापों से बचाएगा। इसका मतलब है कि आपको यह समझना होगा कि लोग पापी हैं, और हम कह रहे हैं, "नहीं, नहीं, हम ऐसा नहीं सोचना चाहते।" लेकिन यह परमेश्वर का तरीका है - उसका नाम यीशु है।

ई.पू. एक मूल धार्मिकता [96:55-99:42]

मत्ती अध्याय 12:36 में यीशु कहते हैं कि हम अपने मुँह से निकलने वाले हर शब्द के लिए न्याय के दिन जवाबदेह होंगे। यह बहुत कठोर भाषा है। इसलिए यीशु कहते हैं कि वह अपने शिष्यों से बेहतर धार्मिकता चाहते हैं; उनकी धार्मिकता हृदय से आनी चाहिए। सिर्फ़ यह जानना ही काफी नहीं है कि क्या सही है। यह हृदय में होना चाहिए, क्रोध और वासना की हद तक। अब बेहतर धार्मिकता मुँह से हाथों तक है। वे जो करते हैं, वैसा मत करो, वे जो तुम्हें करने के लिए कहते हैं, वही करो, वे जो अपने मुँह से कहते हैं, वही करो। तुम करो, दूसरे शब्दों में, तुम्हारे हाथों को परमेश्वर के काम में शामिल होना चाहिए, सिर्फ़ वही नहीं जो वे कहते हैं। वे जो कहते हैं, वैसा नहीं करते; तुम्हें लोगों को वही करना चाहिए जो वचन कहता है।

मूल धार्मिकता, मत्ती द्वारा विकसित मूल धार्मिकता क्या है? परमेश्वर से प्रेम करो, मत्ती अध्याय 22। दो महान आज्ञाएँ क्या हैं? उन्होंने यीशु से पूछा कि पुराने नियम की शिक्षा का सारांश क्या है, यहाँ मुख्य शिक्षा क्या है? यीशु कहते हैं, "अपने पूरे दिल, आत्मा और मन से परमेश्वर से प्रेम करो, और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करो।" वह मूल धार्मिकता यह नहीं है कि मैं किसी और से बेहतर हूँ, यह परमेश्वर का प्रेम और पड़ोसियों का प्रेम है। क्या प्रेम करना कठिन है, क्या घृणा करना आसान है या प्रेम करना आसान है? घृणा करना आसान है, प्रेम करना कठिन है। जीवन में सबसे कठिन चीजों में से एक जो आप करेंगे वह है किसी दूसरे व्यक्ति से प्रेम करना। प्रेम करना कठिन है और यीशु कहते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम करते हैं और दूसरों से प्रेम करते हैं, वे दो चीजें प्रमुख चीजें हैं। अब वह शिष्यों और उनकी समझ के बारे में बात करने जा रहे हैं - मुझे लगता है कि वास्तव में, हम अगली बार इसे उठाएंगे और हम शिष्यों की समझ के बारे में जानेंगे।

स्टेफ़नी बौइलन द्वारा लिखित

बेन बोडेन

द्वारा संपादित टेड हिल्डेब्रांट द्वारा संपादित रफ़